श्री गणेशाय नमः

असली पं. रामस्वरूप शर्मा मेरठ निवासी द्वारा
पंडितों की सुविधा के लिए संग्रहित

हवन पद्धति

(भाषा टीका सहित)

इस पुस्तक में हवन की शास्त्रीय विधि तथा उसके शुद्ध मन्त्रों को विधि-विधान सहित संकलित किया गया है।



देहाती पुस्तक भण्डार के पार्टनर का नवीन संस्थान-



सुमित पब्लिकेशन

113 बी, मुकटराय निवास, चौक बड़शाहबुल्ला
चावड़ी बाजार, दिल्ली-6 फोनः 3264792

* श्री गणेशाय नमः *

असली

पं० रामस्वरूप शर्मा मेरठ निवासी की

हवन पद्धति

(भाषा-टीका सहित)



प्रकाशक :

चिर-परिचित देहाती पुस्तक भण्डार के पार्टनर का नया संस्थान :



सुमित पब्लिकेशन्स

113-B मुकुटराय निवास, चौक बड़शाह बुल्ला,

चावड़ी बाजार, दिल्ली 110006

फोन : 3264792

मूल्य : 20/- बीस रुपये

श्री गणेशाय नमः

अथ हवन पद्धतिः

(भाषा-टीका)

प्रथमं वेदीं रचयित्वा

पहिले पाधा मिट्टी की दो वेदी बनावे । एक हवन की और एक नवग्रह की । नवग्रह की उत्तर में और हवन की दक्षिण में। फिर उन दोनों वेदियों के चारों कोणों में चार केले के खम्ब और चार सरे खड़े करे और उनके चारों ओर आम के पत्तों की बन्दनवार बाँधे, फिर उन दोनों वेदियों के ऊपर लाल कपड़ा (चन्दोया) ताने तथा उन वेदियों पर चून से चौक पूरे । फिर नीचे लिखे श्लोकों के प्रमाण से नवग्रह की जो वेदी है, उस पर रंग आकार सहित नवग्रह स्थापित करे-

अथ नवग्रह- स्थापन विधिः

मध्ये तु भास्करं विद्याच्छशिनं पूर्वदक्षिणे ।
लोहितं दक्षिणे विद्याद् बुधं पूर्वे तथोत्तरे ।१।

वेदी के बीच में सूर्य नारायण की स्थापना करे । पूर्व और दक्षिण के कोण में चन्द्रमा । दक्षिण में मंगल । पूर्व और उत्तर के कोण में वुध ।१।

उत्तरेण गुरुं विद्यात् पूर्वेणैव तु भार्गवम् ।
पश्चिमे च शनिं विद्याद्राहूं दक्षिण पश्चिमे ।२।

उत्तर में बृहस्पति, पूर्व में शुक्र, पश्चिम में शनिश्चर, दक्षिण और पश्चिम कोण में राहू ।२।

पश्चिमोत्तरतः केतुं ग्रहस्थापनमुत्तमम् ॥

पश्चिम और उत्तर के कोण में केतु, इस प्रकार ग्रह स्थापन करे ।

भास्करं वर्तुलाकारम् अर्द्धचन्द्र निशाकरम् । ३ ।

सूर्य का गोल आकार बनावे । चन्द्रमा का आधा गोल बनावे । ३ ।

त्रिकोणं मंगलंचैव बुधं च धनुराकृतिम् ।
पद्माकारं गुरुंचैव चतुष्कोणंचभार्गवम् । ४ ।

मंगल का तीन खूंट का आकार बनावे । बुध का धनुष जैसा, बृहस्पति का पद्म जैसा, शुक्र का चार खूंट का आकार बनावे । ४ ।

खड्गाकृतिं शनिं विद्यात् राहुं च मकराकृतिम् ।
केतुं ध्वजाकृतिं चैव इत्येता ग्रहमूर्त्तयः । ५ ।

शनि का तलवार, राहू का मच्छ तथा केतु का झण्डी जैसा । इस प्रकार देवताओं का आकार बनावे । ५ ।

भास्करांगारकौ रक्तौ श्वेतौ शुक्र निशाकरौ ।
हरिताङ्गो गुरः पीतः शनिः कृष्णंस्तथैव च ।
राहुकेतु तथा धूम्रो, कारयेच्च विचक्षणः । ६ ।

सूर्य और मंगल में लाल रंग भरे । शुक्र और चन्द्रमा में सफेद रंग, बुध में हरा और बृहस्पति में पीला, शनिश्चर में काला, राहु और केतु में धुवें जैसा रंग भरे । विद्वान् पाधा इस रीति से वेदी बनावे । ६ ।

मणडलादेशाने क्रमशः गणेशं ॐकारं श्रीलक्ष्मीं ६४ योगिन्यः स्थापयेत् । पुनः गृहदेवी उत्तरतः

षोडशकोष्ठरूपाः षोडशमातरः ईशाने घटं स्थापयेत् । ततो घट समीपे दीपं मण्डलाद् दक्षिणे कृष्णसर्पश्च स्थापयेत् ।।

नवग्रह की वेदी से ईशान कोण में क्रम से गणेश, ओंकार, श्रीलक्ष्मी, ६४ योगिनी । वेदी से उत्तर में सोलह कोठे की गौरी आदि सोलह माताएँ बनावे । ईशान कोण में फूल का आकार बनावे । उसके ऊपर अन्न धरे, उस अन्न के ऊपर पानी का घड़ा भर कर धरे । उसमे गंगाजल व आम की टहनी गेरे । फिर उस पर पानी का करवा रक्खे । उसमें कलावा बांधे और करवे पर लाल कपड़े में लपेट कर या कलावा बांध कर नारियल धरे । उसके पास सतिये का आकार बनावे । उस पर रोली के रंगे हुए चावल धरे । उन पर गणेश जी को स्थापित करे । उनके पास घी की दीवा बाले । मण्डल से दक्षिण में सर्प बनावे । यह ग्रहों के स्थापन करने की विधि है ।।

अथ पूजन-विधिः

(यजमान प्राङ्मुख उपविश्य)

यजमान पूर्व की दिशा को मुँह करके तथा पाधा उत्तर को मुँह करके बैठे । यजमान पूजन की सब सामग्री पर गंगाजल का छींटा लगावे । (मन्त्र)

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपिवा ।
यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरे शुचिः ।।

(स्वस्तिवाचनं कृत्वा)

पाधा आदि यजमान से लेकर सब सज्ञनों के हाथ में चावल देकर नीचे लिखे मन्त्र पढ़े-

ॐ मतिकरणं भयहरणं गिरिजाशरणं गणेशमभिवन्दे केदारेशनिवेशम् योगीशम् सर्वजगदीशम् ।। ॐ सुमुखश्चैकदन्तश्च कपिलो गजकर्णकः । लम्बोदरश्च विकटो विघ्ननाशो विनायकः ।। धूम्रकेतुर्णगाध्यक्षो भालचन्द्रो गजाननः । द्वादशैतानिनामानि यः पठेच्छ्णुयादपि ।। विद्यारम्भे विवाहे च प्रवेशे निर्गमे तथा । संग्रामे संकटे चैव विघ्नस्तस्य न जायते ।। वक्रतुण्डो महाकाय कोटिसूर्य्यसमप्रभ । अविघ्नं कुरु मे देव ! सर्वकार्येषु सर्वदा ।। ॐ गणानान्त्वा गणपति थ्वंग् हवामहे प्रियाणान्त्वा प्रियपति थ्वंग् हवामहे । निधिनान्त्वा निधिपति थ्वंग् हवामहे व्वसोमम ।। आहम जानि गर्भधमात्वमजासिगर्व्भधम् ।१। ॐ स्वस्ति न इन्द्रोव्वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्व वेदाः

स्वस्ति नस्ताक्ष्र्यो अरिष्ट नेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु ।२। ॐ पयः पृथिव्यां पयऽओषधीषु पयोदिव्यन्तरिक्षे पयोधाः । पयस्वतीः प्रदिशः सन्तु मह्यम् ।३। ॐ विष्णोः रराट मसि व्विष्णोः श्नप्त्रेस्थो व्दिष्णोः। स्यूरसिव्विष्णो ध्रुवोऽसि व्वैष्णवमसि व्विष्णवेत्वा ।४। अग्निर्देवता वातो देवता सूर्य्यो देवता । चन्द्रमा देवता व्वसवो देवता रुद्रा देवता आदित्या देवताः ।। मरुतो देवता विश्वेदेवा देवता बृहस्पतिर्देवतेन्द्रो देवता व्वरुणो देवता ।५। ॐ द्यौः शान्तिरन्तरिक्ष
ॐ शान्ति पृथिवी शान्ति रापः शान्तिरोषधयः शान्ति । वनस्पतयः शान्तिर्विश्वे देवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्व शान्तिः शान्तिरेव शान्ति सा मा शान्तिरेधि ।६। ॐ विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव । यद्भद्रंतन्न आसुव ।७। ॐ एतन्ते देव सवितर्यज्ञम्प्राहुर्बृस्पतये ब्रह्मणे । तेन यज्ञ मव तेन यज्ञ पतिन्तेन मामव ।८। ॐ मनोजूतिर्जुषतामाज्ञस्य बृहस्पति-

र्य्ज्ञमिमन्तनोत्वरिष्टं यज्ञ थ्ठं समिमन्दधातु ।
विश्वेदेवासऽइहमादयन्तामोम् प्रतिष्ठ । एष वै
प्रतिष्ठा नामयज्ञो यत्रैतेन यज्ञेन यजन्तेन सर्वमेव
प्रतिष्ठितं भवति ॐ ।६।

(गणेशादिदेवानामुपरि अक्षतान् क्षिपेत्)

यजमान गणेशजी आदि सब देवताओं पर चावल छोड़ दे और हाथ में दक्षिणा, जल, चावल लेकर प्रतिज्ञा-संकल्प करे ।

अथ प्रतिज्ञा संकल्पः

ॐ तत्सद् विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः ॐ नमः परमात्मने
श्री पुराणपुरुषोत्तमाय अद्य श्री ब्रह्मणोह्नि द्वितीय
प्रहरार्द्धे श्रीश्वेतवाराह कल्पे वैवस्वत मन्वन्तरे
अष्टाविंशतितमे कलियुगे कलि प्रथमचरणे
जम्बूद्वीपेभरतखंडे आर्य्यावर्तान्तर्गत
ब्रह्मावर्तैकदेशे पुण्यक्षेत्रे वेदोक्तफल
प्राप्तिकामसिद्ध्यर्थ वर्तमान सम्वत्सरे अमुक
सम्वत्सरे अमुकायने अमुक भास्करे अमुक
गोलावलम्बनेऽमुक पक्षे ऽमुकतिथौ ऽमुकवासरे
ऽमुकगोत्रोत्पन्नो अमुक प्रवरे अमुक वेदिनो

अमुक शाखिनो अमुक सूत्रिनो अमुक शर्म्माहं सकलपापक्षयपूर्वक सकलमंगलप्राप्त्यै सर्वानिष्ट निवारणार्थं सर्वत्र हर्षविजय द्विपदे चतुष्पदे पशुबांधवकामः मम सकल मनोरथानुरूपायुकीर्ति यशोबलधनधान्य पुत्रपौत्रादि वृद्ध्यर्थं गणपत्यादि पंचलोकपालानां नवग्रहादिदेवताऽधिदेवता प्रत्यधिदेवता नामिंद्रादि दश दिक्पालानामिष्टदेवता कुलदेवता सहितानामन्येषामपि देवःनामावाहनपूर्वक पूजनं करिष्ये ।।

(यजमानश्चतुर्ब्राह्मणवरणं कृत्वा)

यजमान चार ब्राह्मणों का वरण करे ।

४ अंगोछे, ४ पान, ४ सुपारी, ४ दक्षिणा, ४ कलावे की डोरी, चावल, रोली, फूल और ४ हार- ये सब वस्तु पान के ऊपर रखकर, यजमान अपने हाथ में लेकर संकल्प करे ।।

अद्येहेत्यादिऽमुकगोत्रोहं अमुक शर्म्माहं श्रीमहाकाली श्रीमहालक्ष्मीमहासरस्वती देवता-प्रीत्यर्थं अस्मिन् श्रीदुर्गाहवन कर्मणि सांगताफलप्राप्त्यर्थं एभिर्गंधाक्षत पुष्पताम्बूल

पुंगीफल दक्षिणावासोभिः अमुक गोत्रोत्पन्नाम् सुपूजितान् वेदसंख्यकान् युष्मान् ब्राह्मणानूवरणे ।।

फिर यजमान उसी पान की रोली से उन चारों ब्राह्मणों के तिलक करे और यह मन्त्र पढ़े-

नमो ब्रह्मण्यदेवाय गोब्राह्मणहिताय च ।
जगद्धिताय कृष्णाय गोविंदाय नमोनमः ।।

(रक्षाबन्धन) चारों ब्राह्मणों के पौंहची बांधे ।

ॐ व्रतेन दीक्षामाप्नोति दीक्षया ऽऽप्नोतिदक्षिणाम् । दक्षिणा श्रद्धा माप्नोति श्रद्धया सत्यमाप्यते ।२।

(ततः आचार्य वरणं)

अंगोछे पर सब चीजें रख कर कर्म कराने वाले के वरण का संकल्प करे ।

अद्यामुकगोत्रोहं अमुकशर्माहं अस्मिन् श्रीदुर्गाहवन कर्मणि सांगताफल प्राप्त्यर्थं श्रीमहाकाली महालक्ष्मी महासरस्वती देवताप्रीत्यर्थं एभिः गंधाक्षत पुष्प चन्दन ताम्बूल वासोभिः अमुक गोत्रोहंऽमुक प्रवरो अमुकवेदिनो अमुक शाखिनो अमुक सूत्रिनो

अमुक शर्माहं ब्राह्मणमाचार्य त्वेन त्वामहं वरणे।

पान की रोली से पाधा के तिलक करे ।

नमो ब्रह्मण्यदेवाय गोब्राह्मण हिताय च ।
जगद्धिताय कृष्णाय गोविंदाय नमोनमः ।।

पौंची बांधे ।

व्रतेन दीक्षामाप्नोति दीक्षयाऽऽ प्नोति दक्षिणाम् ।
दक्षिणा श्रद्धामाप्नोति श्रद्धया सत्यमाप्यते ।।

(वृतोऽस्मीति प्रति वचनम्। यथाविहितं कर्म कुरु)

यजमान पाधा से कहे कि जैसा शास्त्र में लिखा है, उस प्रकार सब कर्म कराओ ।

(करवाणीति ब्राह्मणो वदेत्)

पाधा यजमान से कहे कि जिस प्रकार शास्त्र में लिखा है, उसी प्रकार सब कर्म कराऊँगा ।

अथ रक्षाविधानम्

यवान् कुशानृतथा दूर्वामक्षतान् दधिमिश्रितान् ।
ताम्बूलं गोमयं चैव कारयेत्ताम्रभाजने ।।

जौ, कुशा, दूब के नाल, दही, चावल, गऊ का गोबर, पान, फूल, रोली- इन सबको ताँबे के बर्तन में या मिट्टी की सरैया में धरे, फिर यजमान उस पात्र को अपने दोनों हाथों में रक्खे पाधा नीचे लिखे मन्त्र पढ़े-

गजाननं भूतगणादिसेवितं कपित्थ जम्बू फलचारुभक्षणम् । उमासुतं शोक विनाशकारकं नमामि विघ्नेश्वर पाद पंकजम् ।१। नमो नमः शाश्वतशांतिहेतवे क्षमादया पूरित चारुचेतसे । गजेन्द्ररूपाय गणेश्वराय पुंसः परस्य प्रथमाय सूनवे ।२। गणाधिपं नमस्कृत्य नमस्कृत्य पितामहम् । विष्णुं रुद्रं श्रियं देवीं वन्दे भक्त्या सरस्वतीम् ।। स्थानक्षेत्रं नमस्कृत्य दिननाथंनिशाकरम् । धरणीगर्भ संभूतं शशिपुत्रं बृहस्पतिम् । दैत्याचार्य्यं नमस्कृत्य सूर्यपुत्रं महाबलम् । राहुं केतुं नमस्कृत्य यज्ञारम्भे विशेषतः ।। शुक्राद्यादेवताः सर्वामुनींश्च कथयाम्यहम् ।। गर्गाचार्यं नमस्कृत्य नारदं मुनि सत्तमम् । वशिष्ठं मुनिशार्दूलं विश्वामित्रं महामुनिम् । पाराशरं तथा व्यासं सर्वशास्त्र विशारदम् । विद्याधिकाश्चये केचित्केचिच्चैव तपोधिकाः । तान् सर्वान् प्रणिपत्याद्य यज्ञे रक्षतु सर्वदा ।८।

यजमान ने जिन २ ब्राह्मणों का वरण किया है, वे सब ब्राह्मण अपने-अपने हाथों में चावल लेकर नीचे लिखे मन्त्र के प्रमाण से छोड़ें—

पूर्वे (पूर्व में) **रक्षतुगोविन्दः आग्नेयां** (आग्नेय कोण में) **गरुड़ध्वजः । याम्यां** (दक्षिण में) **रक्षतु वाराहो नारसिंहस्तु नैऋते** (नैऋत्य में) **केशवो वारुणां** (पश्चिम में) **रक्षेद्वायव्यं** (वायव्य कोण में) **मधुसूदनः । उत्तरे** (उत्तर में) **श्रीधरो रक्षे दैशाने** (ईशान में) **तु गदाधरः ।। शंखं रक्षतु यज्ञाग्रे** (वेदी के आगे) **यज्ञपृष्ठे** (वेदी के पीछे) **च पद्मकम् । वाम पार्श्वे** (वेदी के बाँई तरफ) **गदा रक्षेद्दक्षिणे च सुदर्शनम् ।।** (वेदी के दाहिनी तरफ) **उपेन्द्रो रक्षतु** (आकाश में) **ब्रह्माण्डमाचार्य पातु** (पृथ्वी में) **वामनः । अच्युतः पातुऋग्वेद यजुर्वेदमधोक्षजः ।। कृष्णोरक्षतु सामानि अथर्वाणं तु माधवः । यजमान सपत्नीकं पुण्डरीकाक्षश्च रक्षतु ।**

फिर कुटुम्ब सहित यजमान के ऊपर चावल छोड़े ।

भो ब्राह्मणाः अस्य यजमानस्य गृहे स्वस्तिं वाचयन्तो ब्रुवन्तु स्वस्तिताम् ।३।

ॐ स्वस्तिताम्, इसको तीन बार कहे ।।

ॐ स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्श्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्वेवेदाः । स्वस्ति नस्तार्क्ष्यो अरिष्टनेमिः

स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु ।१। भो ब्राह्मणाः अस्य यजमानस्य गृहे पुण्याहं वाचयन्तो ब्रुवन्तु पुण्याहम् ।२।

ॐ पुण्याहम्, इसको तीन बार करे ।

ॐ पुनन्तु मां दिवजनाः पुनन्तु मनसा धियः । पुनन्तु विश्वाभूतानि जातवेदः पुनीहि माम् ।१। भो ब्राह्मणाः अस्य यजमानस्य गृहे कल्याणं वाचन्तो ब्रुवन्तु कल्याणम् ।२।

ॐ कल्याणम्, इसको तीन बार कहें ।

यथेमाम् वाचं कल्याणीमावदानि जनेभ्यः । ब्रह्मराजन्याभ्या ꣳ शूद्राय चार्याय च स्वाय चारणाय च । प्रियो देवानां दक्षिणायै दातुरिह भूयासमयं मे कामः समृद्धतामुपमादोनमतु ।१। भो ब्राह्मणाः अस्य यजमानस्य गृहे ऋद्धि वाचयन्तो ब्रुवन्तु ॐ ऋद्धिताम् ।२। सत्रस्य ऋद्धिरस्य गन्म ज्योतिरमृता अभूम् । दिवम् पृथिव्या ऽध्यारुहात्मा विदाम देवान्त्स्व-

ज्योंतिः । ३ । भो ब्राह्मणाः अस्य यजमानस्य गृहे पुष्टिं वाचयन्तो ब्रुवन्तु पुष्टिताम् । ४ । रायश्चमे पुष्टश्चमे पुष्टिश्चमे विभुश्च मे प्रभुश्चमे पूर्णंचमे पूर्णतरन्चमे कुर्यन्चमे क्षितिश्चमे ऽन्नश्चमे क्षुंचमे यज्ञेन कल्पताम् ॥ ॐ रक्षोहणं बलगहनवैष्णवीमुद महतं बलगमुत्किरामियं मिनिष्यो समात्ये निचखाने दमहतं बलगमुत्किरामियंमे सबन्धुरमम सबन्धुनिचखाने दमहतं बलगमुत्किरामियं सजातो मम सजातो निचखाने दमहतं बलगमुत्किरामियम् समानो मम समानो निचखाने दमहतं बलगमुत्किरामियम् ॥

(आचार्यःपूर्वमेव सर्षपान् गृहीत्वा मन्त्र मुच्चारयेत्)

कर्म कराने वाला आचार्य भी अपने हाथों में सरसों के दाने लेकर यह मंत्र पढ़, यजमान के ऊपर छोड़े—

ॐ यदा बध्नन् दीक्षायणा हिरण्य थ्ठं शतनीकाय सुमनस्य मानाः तन्म

आबध्नामिशतशारदाऽऽयुष्मांच दृष्टिर्य यथासम् ।।

(यवान् कुशान्तथा दूर्वान् होमकुण्डे क्षिपेत्)

जौ, कुशा, दूब के नाल और गोबर, उस पात्र में से निकाल कर हवन की वेदी के बीच में रख दे । पाधा उस पात्र की रोली से यजमान से तिलक करे । मन्त्र-

ॐ आदित्या वसवो रुद्रा विश्वे देवा मरुद्गणाः। तिलकंतेप्रयच्छन्तु धर्मकामार्थ सिद्धये ।१।

निम्नलिखित मन्त्र पढ़ कर पौंची बांधे-

येन बद्धो बली राजा दानवेन्द्रो महाबलः ।
तेनत्वां प्रतिबध्नामि रक्षे मा चल मा चल ।।

(गणेशादयोवाहनं पूजनं च कृत्वा) यजमान गणेशजी आदि सब देवताओं का आह्वान-पूजन करे ।

गणेशाह्वानमक्षतान् गृहीत्वा

यजमान के हाथ में चावल देकर पाधा यह मन्त्र पढ़े-

ॐ विनायकं महत्पुण्यं सर्वदेवनमस्कृतम् ।
सर्वविघ्नहरं गौरीपुत्रमावाहयाम्यहम् ।।

गणेशजी पर चावल छोड़ देवे (पूजनम् कृत्वा) पूजन करे । मन्त्र-

भो गणपति दैवत ! अत्र मण्डले इहागच्छ, इह तिष्ठ, मम यजमानस्य गृहे शुभं कल्याणं कुरु। गणपतये नमः पाद्यं, अर्घ्यं आचमनम्, स्नानं, वस्त्रं, यज्ञोपवीतं, गंधाक्षतान्, पुष्पं, धूपं, दीपं, नैवेद्यं, ताम्बूलं, पुंगीफलं, दक्षिणां च समर्पयामि नमो नमः ।।

पहले गणेशजी को स्नान करावे अर्थात् तीन आचमनी जल की भरके गणेशजी पर छोड़े या एक पात्र में तीन आचमनी जल की भरके छोड़े, फिर रोली के छींटे लगावें, चावल, फल, फूल, धूप, मीठा, वस्त्र, यज्ञोपवीत, पान, सुपारी सब सामग्री चढ़ावे (प्रार्थना) हाथ जोड़े । पाधा नीचे लिखा मन्त्र पढ़े-

नमो गणेभ्यो गणपतिभ्यश्च वो नमो नमो व्रातेभ्यो व्रातेपतिभ्यश्च वो नमो नमः गृत्सेभ्यो गृत्सपतिभ्यश्च वो नमो नमः विरूपेभ्यो विश्वरूपेभ्यश्च वो नमो नमः ।।

पंचलोकपाल-पूजनम्

गणेशजी के पास ही इनका पूजन करे ।

(ब्रह्माह्वानम्)

ब्रह्माजी का आह्वान करे । मन्त्र-

ब्रह्माणं शिरसानित्यं अष्टनेत्रं चतुर्मुखम् ।
गायत्रीसहितं देवं ब्रह्म आवाहयाम्यहम् ।1।

ब्रह्माजी पर चावल छोड़कर, पूजन कर, सब सामग्री चढ़ावे, जिस प्रकार गणेशजी पर चढ़ाई है ।

(प्रार्थना) फिर हाथ जोड़े ।। मन्त्र-

ॐ ब्रह्म जज्ञानं प्रथमम्पुरस्ताद्विसीमतः सुरुचो वेन आवः । सबुध्न्या उपमाअस्य विष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च विवः ।१।

अर्थ- (पुरस्तात् प्रथम) पूर्वकाल से ही प्रथम (जज्ञानं ब्रह्म) प्रकट हुए ब्रह्म को (सुरुचः सीमतः) उत्तम प्रकाशित मर्यादाओं से (वेनःआवः) ज्ञानी ने देखा है । (सः) वही ज्ञानी (अस्य बुध्न्याः वि-स्थाः) इसके आकाश संचारी विशेष रीति से स्थित और (उपमाः) उपमा देने योग्य सूर्यादिकों को देखकर (सतः च असतः योनिं) सत और असत के उत्पत्ति स्थान को भी (विवः) विशद करता है।

विष्णोराह्वानम्

केशवं पुण्डरीकाक्षं माधवं मधुसूदनम् । रुक्मिणी सहितं देवं विष्णुमावाहयाम्यहम् ।१।

पूजन करे, सब सामग्री चढ़ावे, फिर हाथ जोड़े । (मन्त्रः)

ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम् । समूढ़मस्य पा ँ सुरे ।२।

शिवास्याह्वानम्

ॐ शिवं शंकरमीशानं द्वादशार्द्ध त्रिलोचनम् । उमया सहितं देवम् शिवमावाहयाम्यहम् ।३।

पूजन करे, फिर हाथ जोड़े ।। मन्त्र-

ॐ नमस्ते रुद्र मन्यव उतोत इषवे नमः ।
बाहुभ्यामुत ते नमः ।३।

ओंकाराह्वानम्

आवाहयाम्यहं देवं ओंकापरं परमेश्वरम् ।
प्रणवं त्रिगुणाधारम् प्रमेयं च सनातनम् ।४।

पूजन करे फिर हाथ जोड़े ।।

ओंकार विन्दुसंयुक्तं नित्यं ध्यायन्ति योगिनः ।
कामदं मोक्षदं चैव ओंकाराय नमो नमः ।४।

लक्ष्म्याह्वानम्

क्षीरसागरसम्भूतां शरीरे विष्णुमाश्रिताम् ।
यजमानहितार्थाय लक्ष्मीमावाहयाम्यहम् ।५।

पूजन करे फिर हाथ जोड़े ।। मन्त्र-

ॐ श्रीश्चते लक्ष्मीश्च पत्न्यावहो रात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्तम् । इष्णन्निषाण मुम्मइषाण सर्वलोकम्मइषाण ।५।

पुण्याह्वानम्

सर्वविघ्नहरं देवं सर्वदेवेषु पूजितम् । भारतीं ब्रह्मणः शक्तिं पुण्यामावाहयाम्यहम् ।६।

पूजन करे फिर हाथ जोड़े ॥

ॐ पुनन्तु मा देवजनाः पुनन्तु मनसा धियः ।
पुनन्तु विश्वा भूतानि जातवेदः पुनीहि मा । ६ ।

रक्तपुष्पाक्षतैः मध्ये सूर्याह्वानम्

दिवाकरं सहस्रांशु ब्रह्माद्यै श्चसुरैर्नुतम् ।
लोकनाथं जगच्चक्षुः सूर्यमावाहयाम्यहम् । ७ ।

पूजन करे फिर हाथ जोड़े ॥ मन्त्र-

ॐ आकृष्णेन रजसा वर्त्तमानो निवेश यन्नमृतम्मर्त्यञ्च । हिरण्ययेन सवितारथेनादेवो-याति भुवनानि पश्यन् ॥

आग्नेय्यां श्वेतपुष्पाक्षतः चन्द्राह्वानम्

हिमरश्मिं निशानाथं तारकापतिमुत्तमम् ।
औषधीनां च राजानम् चन्द्रमावाहयाम्यहम् ॥

पूजन करे फिर हाथ जोड़े ॥ मन्त्र-

ॐ इमं देवा असपत्न ꣳ सुवध्वं महते क्षत्राय महतेज्येष्ठाय महते जानराज्यायेन्द्रस्येन्द्रियाय । इमममुष्य पुत्रममुष्यै पुत्र मस्यै विशएषवोऽमी राजा सोमोऽस्माकम् ब्राह्मणाना ꣳ राजा ॥

याम्यां रक्तपुष्पाक्षतैः भौमाह्वावानम्

धरणीगर्भसंभूतं विद्युत्तेजः समः प्रभम् ।
कुमारं शक्तिहस्तं च भौममावाहयाम्यहम् ।।

पूजन करे फिर हाथ जोड़े ।

ॐ अग्निर्मूर्द्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्या अयम् ।
अपा ꣳ रेता ꣳ सिजिन्वति ।

मन्त्र का देवता अग्नि तथा ईश्वर है और इन्हीं के पक्ष में यह मन्त्र है ।

अर्थ- (अयम्) यह (अग्निः) अग्नि, प्रकाशमान परमात्मा (मूर्द्धा) ऊर्ध्व गमनशील होने से उच्च- सर्वोच्च और (दिवःककुत्) प्रकाश में सर्वोच्च है तथा जिस प्रकार बैल की टाट बैल के शरीर में सर्वोच्च होती है, उसी प्रकार (पृथिव्याः) पृथ्वी आदि लोकों का (पति) स्वामी पालक है और (अयम्) कर्मों के अन्तरिक्ष के मध्य में (रेता) जलों को बीजों को (जिन्वति) पहुँचाता, जानता है ।

ऐशान्यां पीतपुष्पाक्षतैः बुधस्याह्वानम्

बुधं बुद्धिप्रदातारं सोमवंश विवर्धनं । यजमान हितार्थाय बुधमावाहयाम्यहम् ।४।

पूजन करे फिर हाथ जोड़े । मन्त्र-

ॐ उद्बुध्य स्वाग्ने प्रतिजागृहि त्वमिष्टापूर्ते स सृजेथामयं च । अस्मिन्सधस्थे अध्युत्तरस्मिन् विश्वेदेवा यजमानश्च सीदत ।।

इस मन्त्र का देवता अग्नि है और यह मन्त्र हवन में अग्नि प्रदीप्त करने के समय का है । जैसा इसका अर्थ किया गया है—

अर्थ- हे (अग्ने) देवता अग्नि (उद्बुध्यस्व) प्रकट हो और (प्रतिजागृहि) खूब प्रकाशित हो । (अयं त्वं च) यह यजमान और तू (इष्टापूर्ते) यज्ञादि इष्ट तथा पूर्त कार्य को ''शुभ और धर्मार्थ को'' (सृजेथाम) उत्पन्न करो । (अस्मिन् सधस्थे) इस अधः सहित स्थान में तथा (अधि उत्तरस्मिन्) इससे भी उत्तम स्थान में ईश्वर करे कि (विश्वेदेवा) सब विश्व के देव व विद्वान् (यजमानश्च) और यजमान (सीदत) बैठें ।

उत्तरे पीतपुष्पाक्षतैः बृहस्पत्याह्वानम्

बुद्धि श्रेष्ठ गिरापुत्रं देवानां च पुरोहितम् ।
शुक्रस्य मंत्रिणं श्रेष्ठं गुरुः मावाहयाम्यहम् । ५ ।

पूजन करे फिर हाथ जोड़े । मन्त्र-

ॐ बृहस्पते ऽअतियदर्यो ऽअर्हाद्यु मद्विभाति क्रतुमज्जनेषु । यद्दीदयच्छवस ऽऋत प्रजात तदस्मासुद्रविणन्धेहिचित्रम् । ५ ।

पूर्वे श्वेतपुष्पाक्षतैः शुक्रस्याह्वानम्

प्रविश्य जठरे जंतोनिष्क्रान्तः पुनरेवयः ।
आचार्यमसुरादीनाम् शुक्रमावाहयाम्यहम् । ६ ।

पूजन करे, फिर हाथ जोड़े ।। मन्त्र-

ॐ अन्नात् परिस्नुतो रसम्ब्रह्मणा व्यपिवत् क्षत्रम्पयः सोमम्प्रजापतिः । ऋतेन सत्यमिन्द्रियं

विपान ॐ शुक्रमन्धसइन्द्रस्येन्द्रियमिदम्पयो ऽमृतं मधु ।।

पश्चिमे कृष्ण पुष्पाक्षतैः शनेराह्वानम्

प्रदीप्तवह्निवर्णाभं भिन्नाञ्जन समप्रभम् ।
छायामार्तण्डसंभूतम् शनिमावाहयाम्यहम् ।।

पूजन करे फिर हाथ जोड़े ।। मन्त्र-

ॐ शन्नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये ।
शंयोरभिस्रवन्तु नः ।।

मन्त्र का देवता सोम व जल है, शनि नहीं । (यह मन्त्र जल तथा सोम पक्ष में है न कि शनि पक्ष में ? इसमें जिस शब्द को शनि मानते हैं, वह है "शं नः" शब्द है, जो कि सन्धि होकर 'शन्ना' हुआ है, न कि शनि ।

अर्थ- (देवीः आपः) दिव्य जल (नःशं) हमारे लिये सुखकारी हो (अभिष्टये) और इष्ट प्राप्ति के लिये तथा (पीतये) पीने के लिये और (नः) हम पर (शंयोः अभिस्रवन्तु) शान्ति का स्रोत चलावे, हमारे लिये शान्तिप्रद वर्षा करे ।

नैर्ऋत्या धूम्र पुष्पाक्षतैः राहोराह्वानम्

चक्रेण च्छिन्नमूर्द्धानम् विष्णुना च निरीक्षितम् ।
सैंहिकेयं महाकायं राहुमावाहयाम्यहम् ।।

पूजन करे फिर हाथ जोड़े ।। मन्त्र-

ॐ कयानश्चित्र आभुव दूती सदावृधः सखा ।
कया शचिष्ठया वृताः । ८ ।

इस मन्त्र का देवता इन्द्र है, राहु नहीं ?

अर्थ- हे इन्द्र ! ईश्वर ! (कया) किस रीति से आप (नः) हमारे (सखा) मित्र (आभुवत) होओगे । उत्तर- (ऊती) रक्षा से । प्रश्न (२)- (क्या) किस (कृत्य) कर्म या वृत्ति से (चित्रः) विचित्र गुण कर्म स्वभाव होवे ? उत्तर-(शचिष्ठया) प्रज्ञायुक्त से । इस प्रकार (सदावृधः) सर्वदा बुद्धि युक्त होवे ।

वायव्यां धूम्रपुष्पाक्षतैः केतोराह्वानम्

ब्राह्मणः कुलसंभूतम् विष्णुलोके भयावहम् ।
शिखिनन्तु महाकायम् केतुमावाहयाम्यहम् । ६ ।

पूजन करे फिर हाथ जोड़े ।। मन्त्र-

ॐ केतुं कृण्वन्न केतवे पेशामर्य्या अपशे से ।
समुषद्भिरजायथाः ।१०।

इस मन्त्र का देवता आत्मा सूर्य है, केतु नहीं । मन्त्र में जो 'केतुम्' शब्द आया है उसका अर्थ 'प्रज्ञान' है । इसे केतु ग्रह समझना भूल है ।

अर्थ- (मर्या) हे मनुष्यो ! (अकेतवे) प्रज्ञान-रहित रात्रि में सोये हुये प्राणी वर्ग के लिये (केतुम्) प्रज्ञान (कृण्वन्) करता हुआ और (अपेशसे) रूप रहित पदार्थ के लिये (पेशः) रूप करता हुआ यह आत्मा "सूर्य" (उषद्भि) ज्ञानयुक्त, दाहक किरणों से (समुअजायथाः) उदय होता है ।

अथऽधिदेवता आवाहनं पूजनम्

जिन २ देवताओं का पूजन किया है, सूर्य से केतु तक, उनके दाहिनी तरफ अधिदेवताओं का फूल, चावल लेकर आह्वान करे।

मध्येरविदक्षिणेश्वेत पुष्पाक्षतैः शिवस्याह्वानम्

त्रिनेत्रं भैरवाकारं पूजिते च सुरासुरैः ।
उत्पत्ति स्थिति कर्तारं शंभुमावाहयाम्यहम् ।

पूजन कर हाथ जोड़े ।। मन्त्र-

ॐ नमः शम्भवाय च मयोभवाय च नमः शंकराय च मयस्कराय च नमः शिवाय च शिवतराय च ।।

आग्नेयस्यां च दक्षिणे रक्तपुष्पाक्षतैः पार्वत्याह्वानम्

हिमपर्वतसंभूतां शरीरे शंभुमाश्रितां । यजमान हितार्थाय उमामावाहयाम्यहम् ।।

पूजन करे फिर हाथ जोड़े । मन्त्र-

ॐ अम्बे अम्बिके अम्बालिके नमानयति कश्चन। ससस्त्यः श्वकः सुभद्रकां काम्पीलवासिनीम् ।।

याम्यां भौम दक्षिणे पीतपुष्पाक्षतै : स्कंदस्याह्वानम्

सुरसेनापतिं देवं तारकस्य विनाशनम् ।
पार्वतीनन्दनं श्रेष्ठंस्कन्दमावाहयाम्यहम् ।

पूजन कर हाथ जोड़े ।। मन्त्र-

ॐ यदूस्कन्दः प्रथमं यजमानः उद्यन्त्समुद्रादुतवा पुरीषात् । श्येनस्य पक्षा हिरणस्य बाहूउपस्तुत्य म्महिजातन्ते अर्वन् ।।

ऐशान्यां बुधदक्षिणे पीतपुष्पाक्षतैः विष्णोराह्वानम्

शंख चक्र गदापाणिम् असुरारिंजगत्प्रभु ।
संसारतारणं देवं विष्णुमावाहयाम्यहम् ॥

पूजन करे फिर हाथ जोड़े ॥ मन्त्र-

ॐ विष्णो रराट मसि विष्णोः श्नप्त्रेस्थो विष्णो स्यूरसि विष्णोर्ध्रुवोसि । वैष्णवमसिविष्णवेत्वा ॥

उत्तरे गुरुदक्षिणे श्वेत पुष्पाक्षतैः ब्रह्मणोऽह्वानम्

मुखं तेजः समं जाता अग्नि देवास्तुब्राह्मणः ।
जगत्सृष्टिं सुरादीनां ब्रह्मआवाहयाम्यहम् ॥

पूजन करे फिर हाथ जोड़े ॥ मन्त्र-

ॐ आब्रह्मन् ब्राह्मणो ब्रह्मवर्चसी जायतामाराष्ट्रे राजन्यः शूर इषव्योऽति व्याधि महारथो जायतां दोग्ध्रीधेनुर्वोढानड्वानाशुः सप्ति पुरन्धिर्योषा जिष्णू रथेष्टा सभेयो युवावस्य यजमानस्य वीरो जायतां निकामे नः पर्जन्यो वर्षतु फलवत्यो नः औषधय पच्यन्तां योगक्षेमे नः कल्पताम् ॥

पूर्वे शुक्रस्य दक्षिणे पीत पुष्पाक्षतैः इन्द्रस्याह्वानम्

देवनाथ सहस्राक्षं शक्तिहस्तं शचीपतिम् ।
पर्वतारिं महाबाहुं शक्रमावाहयाम्यहम् ॥

पूजन कर हाथ जोड़े ।। मन्त्र-

ॐ सजोषा इन्द्र सगणो मरुद्भि सोमं पिव वृत्रहा शूर विद्वान् जहि शत्रून्नृपमृधोनुदस्वाथा भयं कृणुहि व्विशवतो नः ।

पश्चिमे शने दक्षिणे कृष्णपुष्पाक्षतैः यमस्याह्वानम्

सूर्य्यपुत्रं महाबाहुं प्रेतेशं दण्डपाणिनम् ।
जन्तुनां त्रासकर्तारम् यममावाहयाम्यहम् ।।

पूजन तथा प्रार्थना करे ।। मन्त्र-

ॐ असियमो अस्यादित्यो अर्वन्न सत्रितो गुह्येन व्रतेन । असि सोमेन संमया विपृक्त आहुस्ते स्त्रीणि दिवि बन्धनानि ।।

नैऋत्याराहु दक्षिणे धूम्रपुष्पाक्षतैः कालस्याह्वानम्

यमं च महिषारुढं दण्डपाणिमहाबलम् ।
कृष्णाक्षं कृष्णवर्णं च कालमावाहयाम्यहम् ।।

पूजन कर हाथ जोड़े ।। मन्त्र

ॐ कार्षिरसि समुद्रस्यत्वाक्षित्या उन्नयामि ।
समापो अद्भिरग्म तसमोषधीभिरोषधीः ।।

वायव्यां केतु दक्षिणे रक्तापुष्पाक्षतैः गुप्ताह्वानम्

धर्मराजहितं भृत्यं धर्माधर्मविचारकम् ।
अप्रत्यक्षविदं चित्रगुप्तमावाहयाम्यहम् ।।

पूजन कर हाथ जोड़े ।।मन्त्र-

ॐ इन्धानास्त्वा शत हिमाद्युमन्त्त समिधिमहि । वय स्वन्तो व्वयस्कृत सहस्वन्तः सहस्कृत अग्नेसपत्न दम्भनदब्धासो अदाभ्यं चित्रावसोस्वस्तिते पारमशीयः ।।

अथ प्रत्यधिदेवता आह्वानं पूजनम्

अब इसी प्रकार प्रत्यधिदेवताओं का सूर्य से केतु तक उनके बाँई तरफ फूल, चावल लेकर आह्वान और पूजन करे ।

मध्ये सूर्यस्य वामे रक्तपुष्पाक्षतैः अग्न्याह्वानम्

मुखं समस्तदेवानां खाण्डवारण्यदाहकम् ।
पूजितं सर्वयज्ञेषु ह्यग्निमावाहयाम्यहम् ।।

पूजन कर हाथ जोड़े । मन्त्र-

ॐ अग्निमीडे पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजम् । होतारं रत्नधात्मम् ।।

इस मन्त्र का देवता अग्नि है ।

अर्थ- हे परमेश्वर ! (अग्निम्) प्रकाश स्वरूप (पुरोहितम्) सर्वव्यापक होने से सबके आगे वर्तमान (यज्ञस्य) यज्ञ के (देवम्) प्रकाशक (ऋत्विजम्) प्रत्येक ऋतु में पूजनीय (होतारम्) सबके दाता और उपदाता (रत्नधात्मम्) समस्त रम्य पदार्थों को धारण करने वाले "आपकी" (ईडे) स्तुति करता हूँ ।

(आग्नेयां चन्द्रस्यवामेश्वेतपुष्पाक्षतैः आपामाह्वानम्)

त्वमायुः सर्वसिद्धानां देवदानवरक्षसाम् ।
शुद्धिकृत्सर्ववस्तूनां आपः आवाहयाम्यहम् ।।

पूजन कर हाथ जोड़े । मन्त्र-

आपो अस्मान् मातरः शुद्धयन्तु धृतेन नो धृतव्यः पुनन्तु । विश्व 'ॐ हिरिछिप्रं प्रवहति देवी रुदिदाम्यः शुचिरा पूतराभिः ।

दक्षिणे भौम रक्तपुष्पाक्षतैः पृथिव्याह्वानम्

विष्णुना लोकरूपेण जगतां पतिनाधृताम् ।
क्षमायुक्तां धरित्रीं च पृथ्वीमावाहयाम्यहम् ।।

पूजन कर हाथ जोड़े । मन्त्र-

ॐ स्योना पृथिवी नो भवानृक्षरानिवेशनी । यच्छानः शर्म सप्रथाः । ॐ भूरसि भूमिरसि ऽदितिरसि विश्वधाया विश्वस्य भुवनस्य धर्त्री पृथिवीं यच्छं पृथिवींद 'ॐ हपृथिवीं माहि ॐ सिः ।

ईशान्ये बुधस्यवामे पीतपुष्पाक्षतैः विष्णोराह्वानम्

श्रीधरं च गदापाणिमसुरारिं जगत्प्रभुम् ।
संसारतारणं देवं विष्णुमावाहयाम्यहम् ।।

पूजन कर हाथ जोड़े । मन्त्र-

ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधानिदधे पदम् समूढ़मस्यपांसुले ।।

इस मन्त्र का देवता इन्द्र है ।

अर्थ- (विष्णु) इन्द्र ! परमेश्वर ! (इदम्) इस जगत को (त्रेधा) पृथिवी, अन्तरिक्ष, द्युलोक इन तीन प्रकार से (विचक्रमे) पुरुषार्थ युक्त करे या करता है (अस्य) और इस जगत के (पांसुले) प्रत्येक परमाणु में (समूढ़ं) अदृश्य (पदम्) स्वरूप को (निदधे) निरन्तर धारण करता है ।

(उत्तरे गुरुवामे पीतपुष्पाक्षतैः इन्द्राह्वानम्)

शतक्रतुं महापुण्यं देवारिं बलनाशनम् ।
वज्रपाणिं महावीर्य इन्द्रमावाहयाम्यहम् ।।

पूजन कर हाथ जोड़े । मन्त्र-

ॐ महाइन्द्रोवज्रहस्तः षोडषी शर्मयच्छतु हंतु पाप्मानं पयोऽस्मान् द्वेष्टि उपयाम गृहीतोऽसि महेन्द्रायत्वैर्षते योनिर्महेन्द्रायत्वा ।।

ॐ सयोषा इन्द्रा सगणो मरुद्भिः । सोमं पिव वृत्रहा शूर विद्वान् । जहि शत्रुन्नृपमृधो नुदस्वाथाभयं कृणुहि विश्वतो नः ।

(पूर्वे शुक्रस्यवामे पीतपुष्पाक्षतैः इन्द्राणीस्याह्वानम्)

इन्द्रपत्नीं महापुण्यां देवेन्द्र परमप्रियां ।
सर्वसिद्धिकरेन्द्राणीं देवी मावाहयाम्यहम् ।।

पूजन कर हाथ जोड़े । मन्त्र-

ॐ इन्द्र देवी विशी मरुतोऽनुवर्तमानो भवन्त्यर्थेन्द्रदेवी विविशो मानुषीश्चानु वर्तमानो भवतु ॥

पश्चिमे शनेर्वामे श्वेतपुष्पाक्षतैः विधेराह्वानम्

प्रजापतिं सुरश्रेष्ठं ब्राह्मणं कमलोद्भवम् ।
संसार सृष्टि कर्त्तारं विधिमावाहयाम्यहम् ॥

पूजन करे, फिर हाथ जोड़े । मन्त्र-

ॐ प्रजापतयो न त्वदेतान्यन्यो विश्वरूपाणि परिता बभूव । यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नो अस्तु वयं स्याम पतयो रयीणाम् ॥

नैऋत्यां राहोर्वामे कृष्णपुष्पाक्षतैः शेषस्याह्वानम्

भुजंगमंडलाधीशं धरिणी धरणक्षमां ।
पातालनायकं देवं शेषमावाहयाम्यहम् ॥

पूजन करे फिर हाथ जोड़े । मन्त्र-

ॐ नमोस्तु सर्पेभ्यो ये के च पृथिवी मनु ।
ये अन्तरिक्षे ये दिवि तेभ्यः सर्पेभ्यो नमः ॥

वायव्यां केतोर्वामे श्वेतपुष्पाक्षतैः ब्रह्माह्वानम्

पितामहं सर्वदेवानां परब्रह्मस्वरूपिणः ।
व्यक्ताव्यक्तगुणं रूप ब्रह्म आवाहयाम्यहम् ॥

पूजन कर हाथ जोड़े । मन्त्र-

ॐ ब्रह्म जज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्विसीमतः सुरुचो वेन आवः । सबुध्न्या उपमा अस्यविष्ठाः शतश्च योनिमसतश्चविवः ।

दशदिग्पालानामाह्वानं पूजनम्

नवग्रहों की जो वेदी है, उसके चारों तरफ दसों दिशाओं में दस दिक्पालों का पूर्व से दक्षिण को आह्वान कर पूजन करे ।

अक्षतान् गृहीत्वा इन्द्रस्याह्वानम्

ऐरावतसमारूढं व्रजपाणिं महाबलम् ।
आश्रितंदिशि पूर्वस्यां इन्द्रमावाहयाम्यहम् ।।

पूर्व में चावल छोड़े । पूर्व दिशा में पूजन करे फिर हाथ जोड़े ।

ॐ त्रातारमिन्द्रसवितारमिन्द्र हवे हवेसुहव थ्वं शूरमिन्द्र थ्वं ह्वयामि शुक्रम्पुरुहूतमिन्द्र थ्वं स्वस्तिनो मघवाधात्विन्द्रः ।।

इन्द्र इहागच्छ इह तिष्ठ ।।

(अक्षते : अग्नेराह्वानम्)

छागपृष्ठसमारूढं शक्तिहस्तं महाबलम् ।
आश्रितं दिशि चाग्नेयां अग्निमावाहयाम्यहम् ।।

अग्निकोण में चावल छोड़ कर पूजन करे । मन्त्र-

ॐ अग्निदूतं पुरोदधे हव्यवाहमुपब्रुवे देवां आसादयादिह ॥

अग्ने इहागच्छ इह तिष्ठ ॥

(अक्षतैः यमस्याह्वानम्)

महिष पृष्ठसमारूढं दण्डहस्तं महाबलम् ।
आश्रितं दिशि याम्यां च यममावाहयाम्यहम् ॥

दक्षिण में चावल छोड़ कर पूजा करे ।

ॐ यमाय त्वा मखाय त्वा सूर्यस्यत्वा तपसे । देवस्त्वा सविता मध्वानक्तु पृथिव्याः स थ्धं स्पृशस्पाहि अर्चिरसि शोचिरसि तपोऽसि ॥

यम इहागच्छ इह तिष्ठ ॥

(अक्षतैः नैर्ऋत्याह्वानम्)

महाप्रेत समारूढं खड्गहस्तम्महाबलम् ।
आश्रितं दिशि नैर्ऋत्यां नैर्ऋत्यमावाहयाम्यहम् ॥

नैर्ऋत्य कोण में चावल छोड़े और पूजन करे ॥

ॐ एष ते नैर्ऋत्येर्भागस्त्वं जुषस्व स्वाहा अग्निनेत्रेभ्यो देवेभ्यः पुरः सद्भ्यः स्वाहा

यमनेत्रेभ्यो देवेभ्यो दक्षिणा सद्भ्यः स्वाहा
विश्वदेवनेत्रेभ्यो देवेभ्यः पश्चात्सद्भ्यः स्वाहा
मित्रावरुणनेत्रेभ्यो वामरुनेत्रेभ्यो वामदेवेभ्यः
उत्तरा सद्भ्यः स्वाहा सोमनेत्रेभ्यो देवेभ्यः
उपरिस्विद्भ्यो द्रुवः स्वस्तेभ्यः स्वाहा ।

नैऋत्ये इहागच्छ इहतिष्ठ ॥

(अक्षतैः वरुणाह्वानम्)

प्रेतपृष्ठ समारूढ़ं खड्गहस्तं महाबलम् ।
वारुण्यां दिशिमाश्रित्य वरुणमावाहयाम्यहम् ॥

पश्चिम में चावल छोड़ कर पूजन करे । मन्त्र-

ॐ वरुणस्योत्तम्भनमसिव्वरुणस्य स्कम्भ
सर्ज्जनीस्थो वरुणस्य ऋतुसदन्नयसि वरुणस्य
ऽऋतसदन मसि वरुणस्यऽऋतसदन मासीद ॥

वरुण इहागच्छ इहतिष्ठ ॥

(अक्षतैः वायोराह्वानम्)

मृगपृष्ठसमारुढ़ं खड्ग हस्तं महाबलम् ।
आश्रितं दिशि वायव्यां वायुमावाहयाम्यहम् ॥

वायव्य कोण में चावल छोड़, पूजन कर हाथ जोड़े ।

ॐ वातो वामनो वा गन्धर्वा सप्त ꣳ वि शतिः
ते अग्रे अश्वमयञ्जस्ते अस्मिन् जवमादधुः ।

वायो इहागच्छ इहतिष्ठ ।

(अक्षतैः कुबेराह्वानम्)

मेषपृष्ठसमारूढ़ं गदाहस्तं महाबलम् ।
उदीचीं दिशिमाश्रित्य कुबेरमावाहयाम्यहम् ।।

उत्तर में चावल छोड़े पूजन करे, हाथ जोड़े ।

ॐ कुविदंगयवमन्तोयवंचिद्यथा दान्त्यनुपूर्वं विपूय इहेहैषां कृणुहि भोजनानि ये वर्हिषो नमः उक्तिं यजन्ति ।।

कुबेर इहागच्छ इह तिष्ठ ।।

(अक्षतैः शिवस्याह्वानम्)

वृषपृष्ठसमारूढ़ं शूलहस्तं महाबलम् ।
ऐशानीं दिशिमाश्रित्य शिवमावाहयाम्यहम् ।।

ईशान कोण में पूजन करे फिर हाथ जोड़े । मन्त्र-

ॐ ईशावास्यमिदं सर्वं यत्किञ्च जगत्यां जगत् तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा मा गृधः कस्यस्विद्धनम् ।।

अर्थ- (इंद सर्व यत्किन्च जगत्यां जगत्) यह समस्त जगत् अर्थात् सर्व चराचर जगत् (ईशावास्य) ईश्वर द्वारा आच्छादनीय है । सब जगत् को ईश्वर रूप अनुभव कर (त्येन त्यक्तेन भुंजीथा) किसी के विशेष मोह में न फंस, सबके त्याग भाव से आत्मा का पालन कर (मा गृध कस्य स्विद्धनम्) धन विषयक अथवा पदार्थ विषयक इच्छा न करे ।

ईशान इहागच्छ इह तिष्ठ ।।

(अक्षतैः अन्नताह्वानम्)

नागपृष्ठसमारूढं शूलहस्तं महाबलम् ।
पातालदिशिमाश्रित्य अनन्तमावाहयाम्यहम् ।।

पश्चिम में नैऋत्य के बीच में चावल छोड़ पूजन करे ।

ॐ नमोस्तु सर्पेभ्यो ये के च पृथवीमनु ।
ये अन्तरिक्षे ये दिवि तेभ्यः सर्पेभ्यो नमः ।

अनन्तदेवा इहागच्छ इह तिष्ठ ।।

(अक्षतैः ब्रह्माह्वानम्)

हंसपृष्ठसमारूढं श्रुव हस्तं महाबलम् ।
ब्रह्मणो दिशमाश्रित्य ब्रह्म आवाहयाम्यहम् ।।

पूर्व और ईशान के बीच में चावल छोड़ पूजन करे ।

ॐ ब्रह्म जज्ञानं प्रथमम्पुरस्ताद्विसीमतः
सुरुचोव्वेन आवः । सबुध्न्या उपमा अस्यविष्ठाः
सतश्च योनिमसतश्चविवः ।

ब्रह्म इहागच्छ इह तिष्ठ ।।

(पूर्वे अष्टवसु प्रपूजयेत्)

पूर्व में अष्ट वसुओं का पूजन कर सब सामग्री चढ़ावे ।

(दक्षिणे एकादशरुद्र पूजनम्)

दक्षिण में जो ग्यारह शिव हैं, उनका पूजन कर सब सामग्री चढ़ावे ।

पश्चिमे द्वादशादित्य पूजनम्

पश्चिम में जो बारह सूर्य्य नारायण हैं, उनका पूजन कर सब सामग्री चढ़ावे ।

(विश्वेदेवास्तथोत्तरे)

उत्तर में विश्वदेवा का पूजन कर सब सामग्री चढ़ावे ।

(वामपार्श्वे शेष द्विपदमाह्वयेत्)

इनसे बाँई तरफ सर्प का आह्वान करे ।

आवाहयामि देवेशं पातालतल वासिनम् ।
सहस्रशिरसं नागं फणीमणि विराजितम् ।
कर्पूरविशदम् नागं नागराजमहाबलम् ।
परोपकारनिरतमनंतं विष्णुवाहनम् ।
आगच्छ नागराज त्वं क्षेत्रेस्मिन् सन्निधौ भव ।

सर्प के ऊपर चावल छोड़े पूजन कर, सब सामग्री चढ़ावे फिर हाथ जोड़े ।

ॐ नमोस्तु सर्पेभ्यो ये के च पृथिवी मनु ।
ये अन्तरिक्षे ये दिवि तेभ्यः सर्पेभ्यो नमः ।।

(अश्विन्यादिसप्त नक्षत्राणि स्थापयेत्पूर्ववत् क्रमात्)

अश्विनी आदि सात नक्षत्रों को क्रमशः पूर्व में स्थापित करे ।

(पुष्यादि सप्त नक्षत्राणि दक्षिणे स्थापयेत्)

पुष्य आदि सात नक्षत्र दक्षिण में स्थापित करे ।

(स्वात्यादि सप्तनक्षत्राणि पश्चिमे स्थापयेत्)

स्वाति आदि सात नक्षत्रों का पश्चिम दिशा में स्थापन करे ।

(अभिजितादि सप्तनक्षत्राणि उत्तरे स्थापयेत्)

अभिजित् आदि सात नक्षत्रों को उत्तर दिशा में स्थापन करे ।

(अश्विन्यादि नक्षत्राणां गन्धादीनां पूजनं कुर्यात्)

अश्विनी आदि सब नक्षत्रों का रोली से पूजन कर सब सामग्री चढ़ावे ।

नैर्ऋत्यां नवपितृकं पूजयेत्

नैर्ऋत्य में नव पित्रों का पूजन करे ॥

सागराः सप्त वायव्ये पूज्याः ।

सात समुद्रों का वायव्यकोण में पूजन करे ।।

उत्तरे मरुतः पूज्या सप्तऋषीन्स्थापयेत् ।

उत्तर में मरुत और वहीं सात मुनियों को स्थापित कर, पूजन करे, हाथ जोड़े ।

कश्यपोऽत्री भरद्वाजो विश्वामित्रोऽथ गौतमः ।
यमदग्निर्वशिष्ठश्च सप्तैते मुनयः स्मृताः ।१।

(एवं प्रकारेण विष्कम्भादियोगः स्थापयेत्)

इसी तरह विष्कम्भादि योगों की चारों दिशाओं में स्थापना कर पूजन करे ।

मेषादि द्वादश राशिभ्यो नमः

इसी प्रकार मेष से तीन-तीन राशियों को चारों दिशाओं में स्थापित कर पूजन करे ।

बवादि करणेभ्यो नमः

इसी प्रकार बवादि तीन-तीन करणों को चारों दिशाओं में स्थापित कर पूजन करे ।

उत्तरे ध्रुवाय नमः

उत्तर में ध्रुवजी का पूजन कर सब सामग्री चढ़ावे ।

दक्षिणे अगस्त्याय नमः

दक्षिण में अगस्त्यजी का पूजन कर सब सामग्री चढ़ावे ।

अथ कलश-स्थापनम्

अब कलश की पूजा करे ।

(भूमि-स्पर्शनम्)

कलश के नीचे भूमि पर हाथ लगावे और यह मन्त्र पढ़े-

ॐ मही द्यौ पृथिवी च न इमं यज्ञ मिमिक्षताम् पितृतां नो भरीमभिः ।

(यवान् क्षिपेत्)

कलशे के नीचे जल छोड़े ।

ॐ औषधयः समवदंतसोमेन सहराज्ञा । यस्मै कृणोति ब्रह्मणस्त्व राजन् पारयामसि ।

पूर्वादि चतुर्दिशु कलशे चतुर्वेदान् सम्पूज्य

कलश के चारों ओर चारों दिशाओं में चारों वेदों की पूजा करे।

(ऋग्वेदमावाह्य)

ऋग्वेद का पूर्व में अवाहन करे ।

ॐ अग्निमीले पुरोहितम् यज्ञस्यदेवमृत्विजं होतारं रत्नधातमम् ॥

यह मन्त्र अग्नि तथा ईश्वर पक्ष में है, किसी ग्रन्थ के सम्बन्ध में नहीं है तथा वेद नाम किसी ग्रन्थ का नहीं है, वेद नाम ज्ञान का है ।

(यजुर्वेदमावाह्य)

यजुर्वेद का दक्षिण की ओर आवाहन करे ।

ॐ इषे त्वोर्ज्जे त्वा वायवस्थ देवो वः सविताः प्रार्पयतु श्रेष्ठतमाय कर्मणु आप्यायध्वमघ्न्या अयक्ष्मा व स्तेन ईशत माघश थ्ठं सो ध्रुवा अस्मिन् गोपतौ स्यात् बह्वीर्ययजमानस्य पशून्पाहि ॥

यह मन्त्र भी किसी ग्रन्थ (पोथी) के सम्बन्ध मे नहीं है ।

(सामवेदमावाह्य)

सामवेद का पश्चिम में आवाहन करे ।

ॐ अग्ने आयाहि वीतये गृणानो हव्य दायये नि होता सत्सि बर्हिषि ॥

इस मन्त्र का देवता अग्नि, आत्मा, ईश्वर है और यह मन्त्र इन्हीं के पक्ष में है ।

(अथर्व वेदमावाह्य)

अथर्व वेद का उत्तर दिशा में आवाहन करे । मन्त्र-

ॐ शन्नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये शंय्योरभिस्रवन्तु नः ॥

(चन्दनादि लेपनम्)

घड़े पर चन्दन, केशर आदि लगावे ॥ मन्त्र-

ॐ आजिघ्रम् कलशं मह्या त्वा विशं त्विं दिवः पुनरुर्जा निवर्त्त स्वसानः सहस्रंसूक्ष्मारुधारा पयस्वती पुनर्मा विशताद्रयिः ॥

(मंत्रेण जलदानम्)

इस मन्त्र से गंगाजल गेरे । मन्त्र-

ॐ वरुणस्योत्तम्भनमसि वरुणस्य स्कम्भ सर्ज्जनीस्थो वरुणस्य ऋत सदन्नयसिवरुणस्य ऽऋतसदनमसि वरुणस्यऽऋत सदनमासीद ॥

(अश्वत्थपत्र प्रक्षेपः)

फिर पीपल के पत्ते आदि पंच- पल्लव गेरे । मन्त्र-

ॐ अश्वत्थे वो निषदनं पर्णे वो वसतिष्कृता ।
गोभाज इत्किलासथयत्सनवथ पुरुषम् ॥

(पुनर्दूर्वाप्रक्षेपः)

फिर दूब के नाल गेरे ।

ॐ कांडात्कांडात्प्ररोहंति पुरुषः पुरुषम्परि ।
एवानो दूर्वे प्रतनु सहस्रेण शतेन च ॥

(कुशपत्राक्षेपणम्)

कुशा का पवित्रा गेरे । फिर मन्त्र पढ़े-

ॐ पवित्रेस्थो वैष्णव्यौ सवितुर्वः प्रशवः उत्पुनाम्यच्छिद्रेण पवित्रेण सूर्यस्य रश्मिभिः । तस्य ते पवित्रपते पवित्रपूतस्य यत्कामः पुनेतच्छकेयम् ॥

(पुंगीफलम्)

सुपारी गेरे । मन्त्र-

ॐ याः फलिनीर्य्या अफला अपुष्पायाश्च-पुष्पिणीः । बृहस्पतिप्रसूतास्ता नो मुञ्चत्वᳫं हसः ।

(ताम्बूलम्)

पान गेरे और यह मन्त्र पढ़े-

प्राणाय स्वाहा अपानाय ॥

(अथाम्रपल्लवम्)

आम की टहनी गेरे ।

ॐ अम्बे अम्बिके अम्बालिके न मानयति कश्चन स सस्त्यः श्वकः सुभद्रिकां काम्पीलवासिनीम् ॥

(पुष्पाणि तूष्णीं प्रक्षिपेत्)

फूल चुपके से छोड़ दे ।

(दक्षिणा-द्रव्यं क्षिपेत्)

दक्षिणा गेरे ।

ॐ हिरण्यगर्भः समवर्त्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत् । सदाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम् ॥

(सर्वौषधी क्षिपेत्)

सर्वोषंधी या शतावर गेरे । मन्त्र-

ॐ या औषधीय यः पूर्वा जाता देवेभ्य स्त्रियुगंपुरा। मनै नुबभ्रूणामह ꣳ शतं धामानि सप्त च ॥

(परिधान्याक्षिपेत्)

सतनजा गेरे ।

ॐ तूश्च सिद्धार्थ कुष्टर जनीद्वयंलोध्रमुस्ता लामज्ञशैलफलिनी मूर्वासिमुक्ता इतिस्मृत्मुक्ता ।

धान्यमसि धिनुहि देवान्प्राणाय त्वो दानाय त्वा व्यानाय त्वा दीर्घा मनु प्रसितेमायुषे धान्दे वौवः सविता हरिण्यपाणिः प्रतिगृभ्णत्वच्छिद्रेण पाणिना चक्षुषो त्वामहीर्नापयोसि ।

(पुनः समुद्रजलदानम्)

फिर समुद्र का जल गेरे और यह मन्त्र पढ़े-

ॐ समुद्राय त्वा वाताय स्वाहा सरिताय त्वा वाताय स्वाहा अना धृष्यायत्वा वाताय स्वाहा समुद्रायत्वा वाताय स्वाहा ।।

(धूपम्)

धूप दे । मन्त्र-

ॐ धूरसि धूर्व्वन्तं धूर्व्व योस्मान् धूर्वयं वयं धूर्वामः। देवानामसि वह्नितम थ्थ्ः सस्नितमम्यर्प्रिपतमम् जुष्टतमं देवहूतम् ।।

(दीपं दद्यात्)

दीपक दिखावे । मन्त्र—

ॐ अग्निर्ज्योतिरग्निः स्वाहा सूर्य्यो ज्योतिर्ज्योतिः सूर्य्यः स्वाहा अग्निर्वर्चो ज्योतिवर्चः स्वाहा । सूर्य्येःवर्चा ज्योतिवर्चः स्वाहा । ज्योति सूर्य्यः

सूर्य्या ज्योतिः स्वाहा ।

(नैवेद्यं दद्यात्)

मीठा चढ़ावे । मन्त्र-

अन्नपतेऽन्नस्य नोदेह्य नमीवस्य शुष्मिणः प्रदातारं। तारिष ऊर्ज्जं नो देहि द्विपदे चतुष्पदे ।।

(गन्धम्)

इस मन्त्र से रोली डाले । मन्त्र-

ॐ त्वा गन्धर्वाऽअखनोस्त्वामिन्द्रस्त्वां बृहस्पतिः। त्वामोषधे सोमो राजा विद्वान्यक्ष्मादमुच्यत ।

पंचरत्नम्

इस मन्त्र से पंचरत्न गेरे । मन्त्र-

ॐ परिवाजपतिः कविरग्निर्हव्यान्यक्रमोत् । दधद्रत्नानि दाशुषे ।

इस मन्त्र से सप्तमृत्तिका डाले । मन्त्र-

ॐ स्योना पृथिवी नो भवानृक्षरानिवेशनी । यच्छानः शर्मसप्रथाः ।

(वस्त्रं दद्यात्)

कपड़ा चढ़ावे । मन्त्र-

ॐ पूर्णा दर्वि परापत सुपूर्णा पुनरापतः वस्तेव विक्रीणावहा इष मूर्ज थ्ठं शतक्रतो ॥

(प्रतिष्ठां कुर्य्यात्)

चावल छोड़े ।

ॐ एतन्ते देव सवितर्य्यज्ञम्प्राहुर्बृहस्पतये ब्रह्मणे तेन यज्ञमेव तेन यज्ञपतिन्तेन मामव ॥

ॐ मनोजूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्ट य समिमन्दधातु विश्वेदेवासऽ इह मादयन्तामों प्रतिष्ठ ॥

(श्रीफल पुष्पमालाम्)

नारियल व फूलों की माला पहिनावे । मन्त्र-

ॐ श्रीश्चते लक्ष्मीश्च पत्न्यावहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्तम् । इष्णन्निषाणा मुम्मइषाण सर्वलोकम्मइषाण ।

(तंडुल परिपूरितपात्रं कलशोपरिस्थापयेत्)

घड़े के ऊपर एक कटोरे में चावल भर कर धरे । मन्त्र-

ॐ पूर्णा दर्वि परागत सुपूर्णा पुनरापत। वस्नेन विक्रीणावहाऽ इषमूर्जे थ्ठं शतक्रतो ॥

(प्रार्थना)

अब हाथ जोड़े । मन्त्र-

ॐ गंगा द्यौः सरितः सर्वाः समुद्राश्च सरांसि च ।
सर्वे समुद्रास्स सरितः सरांसि जलदा नदाः ।
आयांतु यजमानस्य दुरितक्षयकारकाः ।
कलशस्य मुखे विष्णुः कण्टे रुद्रः समाश्रितः ।
मूलत्तस्य स्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृगणाः स्मृता ।
कुशौ तु सागराः सप्त सप्तद्वीपा वसुन्धरा ।
ऋग्वेदोऽथ यर्जुविदः सामवेदो ह्यथर्वणः ।
अंगैश्चसहिताः सर्वे कलशंतु समाश्रिताः ।
देवदानवसंवादे मथ्यमाने महोदधौ ।
उत्पन्नोसि तदा कुम्भ विधृतो विष्णुना स्वयम् ।
त्वत्तोये सर्वतीर्थानि देवास्सर्वे त्वयि स्थिताः ।
त्वयि तिष्ठन्ति भूतानि त्वयि प्राणाः प्रतिष्ठिताः ।
शिवः स्वयंत्वमेवासिविष्णुस्त्वं च प्रजापतिः ।
आदित्या वसवोरुद्रा विश्वेदेवाः सपैतृकाः ।
त्वयि तिष्ठन्ति सर्वेपि यन्मे कामफलप्रदाः ।
त्वत्प्रसादादिमं यज्ञ कर्त्तु मीहे जलोद्भव ।
सानिध्यं कुरु मे देव प्रसन्नो भव सर्वदा ।

ब्रह्मणो निर्मितैः तोयैर्मन्त्रैश्चाप्यमृतोपमैः ।
प्रार्थयामि च तं कुम्भं वांछितार्थं प्रयच्छ मे ।

(गौर्य्यादिषोडशमातृ-पूजनम्)

पार्वती आदि सोलह माताओं का पूजन करे ।

ॐ गौरी पद्मा शची मेधा सावित्री विजया जया ।
देवसेना स्वधा स्वाहा मातरो लोकमातरः ।
हृष्टिः पुष्टिस्तथा तुष्टिरात्मदेवीं त्वया सह ।
आदौ विनायकः पूज्ययन्ते च कुलमातरः ।

(अथ यद्देवनिमित्तकोहोमस्तत् पूजनम्)

जिस देवता के निमित्त हवन हो, उस देवता का पूजन करे । दुर्गा का आह्वान करे । मन्त्र-

ॐ जयन्ती मंगला काली भद्रकाली कपालिनी ।
दुर्गा क्षमा शिवा धात्री स्वाहास्वधानमोस्तुते ।।

दुर्गा की पुस्तक का पूजन करे । दक्षिणा, नारियल सब सामग्री चढ़ावे, फिर हाथ जोड़े । मन्त्र-

ॐ दुर्गे स्मृता हरसि भीतिमशेष जन्तोः स्वस्थैः स्मृता तिमतीव शुभां ददासि । दारिद्र्य दुःखभयहारिणि का त्वदन्या सर्वोपकार करणाय सदार्द्रचित्ता ।

(स्रुव पूजनम्)

स्रुवे का पूजन करे, सामग्री चढ़ावे, हाथ जोड़े ।

ॐ ब्रह्म जज्ञानं प्रथमम्पुरस्ताद्विसीमतः सुरुचो व्वेन आवः । सबुध्न्याउपमा अस्य विष्ठाः सतश्च योनिमसतश्चविवः ।

अथ कुशकण्डिका करणम्

फिर पाधा वेदी का संस्कार करावे ।

ततो वेदिकायां तुषकेशशर्करा भस्मादि रहिताम्

पाधा वेदी को देख ले कुछ तृणादि अशुद्ध वस्तु न हो ।

हस्तमात्र परिमितां चतुरस्रभूमिं कुशैः परिसमूह्य

एक हाथ भर चौकोर वेदी पर कुशा से तीन बार साफ करे ।

(तान्कुशान् ईशान्यां दिशि त्यजेत्)

उन कुशाओं को ईशान दिशा में रख दे ।

(गोमयोदकेनोपलिप्य)

वेदी पर गौ के गोबर से लीपे ।

स्रुवमूलेन प्रागग्र प्रादेशमात्रमुत्तरोत्तर क्रमेण त्रिरुल्लिख्य

स्रुवे की जड़ से पूर्व को सिरा कर, बायें हाथ का अंगूठा और उसके पास की अंगुली को वेदी पर फैला कर दक्षिण से उत्तर को तीन लकीर खींचे ।

(उल्लेखन क्रमेणा नामिकांगुष्ठाभ्यां मृदमुद्धृत्य)

कनकी अंगुली के धोरे की अंगुली और अंगूठे से वेदी के बीच की मिट्टी उठाकर तीन बार ऊपर उछाले ।

(जलेनाभ्युक्ष्य)

फिर जल का छींटा लगावे ।

(नूतनकांस्यपात्रेणाग्निमानीय स्वाभिमुखं निदध्यात्)

नवीन कांसी के पात्र में या सकोरे में अग्नि मंगा कर अपने आगे रख ले । उसको पात्र से ढक कर उसका आह्वान करावे ।

ॐ मुखं समस्तदेवानां खांडवोद्यानदाहकम् ।
पूजितं सर्वयज्ञेषुअग्निमावाहयाम्यहम् ।।

पूजन करे, सब सामग्री चढ़ावे, फिर हाथ जोड़कर यह मन्त्र पढ़े । मन्त्र-

ॐ अग्निदूतं पुरोदधे हव्यवा मुपव्रते । देवां आसादयादिह ।।

(हवन वेदिकाह्वानम्)

फिर पाधा हवन की वेदी का आह्वान करावे ।

विष्णुनालोकरूपेण जगतां पतिनो धृतां ।
क्षमायुक्तां च धरणीं पृथ्वीमावाहयाम्यहम् ।

(पूजनम्)

पूजन करे, सब सामग्री चढ़ावे, फिर हाथ जोड़े ।

ॐ स्वस्ति नः इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः । स्वस्ति न स्तार्क्ष्योअरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु ॥

(अग्निस्थापन कुर्यात्समाधाय)

फिर पाधा वेदी पर अग्नि रख कर उसके ऊपर लकड़ी रखदे।

(वरण संकल्पः)

एक पान पर रोली, चावल, सुपारी, फूल, कलावा, दक्षिणा, अंगोछा-ये सब सामग्री रख के ब्रह्मा के वरण का संकल्प करे ।

अमुकगोत्रोहं अमुकशर्माहं अस्मिन् श्रीदुर्गाहवनकर्मणि सांगताफलसिद्ध्यर्थं श्रीमहाकाली महालक्ष्मी महासरस्वती देवता प्रीत्यर्थमेभिः गंधाक्षतपुष्पचन्दनताम्बूलं पुंगीफल दक्षिणा वासोभिः अमुकगोत्रं अमुक शर्माणं ब्राह्मणं ब्रह्मत्वेन त्वामहं वृणे ।

जिसको ब्रह्मा ने बनाया हो, उस ब्राह्मण के पान पर जो कलावा रक्खा है, उससे पौंहची बांधे और ये मन्त्र पढ़े । मन्त्र-

ॐ व्रतेन दीक्षामाप्नोति दीक्षयाप्नोति दक्षिणाम् । दक्षिणा श्रद्धामाप्नोति श्रद्धया सत्यमाप्यते ।१।

(तिलकं कुर्यात्)

तिलक करे । मन्त्र-

ॐ नमो ब्रह्मण्यदेवाय गोब्राह्मणहिताय च ।
जगद्धिताय कृष्णाय गोविन्दाय नमो नमः ।२।

(व्रतोस्मीति प्रतिवचनम्)

यजमान पाधा से ऐसा कहे- ।

(यथाविहितं कर्म कुरु)

जैसा शास्त्र में लिखा है, वैसा ही सब कर्म कराओ ।

(ॐ करवाणीति ब्राह्मणो वदेत्)

पाधा ऐसा कहे- जिस प्रकार शास्त्र में लिखा है, उसी प्रकार सब कर्म कराऊँगा ।

(ततग्नेर्दक्षिणतः शुद्धमासनं दत्वा)

अग्नि से दक्षिण में ब्रह्मा के आसन के लिए एक पत्ता ढाक का धरे ।

(तदुपरि प्रागग्रान् कुशानास्तीर्य)

उस पत्ते के ऊपर, पूर्व को अगला भाग, यानी फुलंगन कर कुशा फैलावे ।

(ब्रह्माणमग्नि प्रदक्षिण क्रमेणानीयाऽत्र त्वं मे ब्रह्मा भवेत्यभिधाय)

कुशाओं का ब्रह्मा बनावे और ब्रह्मा को अग्नि की परिक्रमा करा कर उन कुशाओं के ऊपर उत्तर को मुँह करके

(कल्पितासने उपवेशयेत्)

बिछाये हुए आसन पर रख दे ।

(ततः प्रणीतापात्रं पुरतः कृत्वा, वारिणा परिपूर्य, कुशैराच्छाद्य, ब्रह्मणो मुखमवलोक्य, अग्नेरुत्तरतः कुशोपरि निदध्यात्)

एक सकोरे में जल भरे, फिर कुशाओं से ढके सकोरे में ब्रह्मा का मुँह दिखावे । फिर अग्नि से उत्तर की तरफ कुशा के ऊपर सकोरा धरे ।

(ततः परिस्तरणम्)

फिर कुशा फैलावे ।

(बर्हिषश्चतुर्थभागमादाय)

१६ कुशा लेकर वेदी के चारों तरफ इस प्रकार धरे ।

(आग्नेयादीशानान्तम्) ४

अग्निकोण से ईशान दिशा तक चार कुशा धरे ।

(ब्रह्मणोग्निपर्यन्तम्) ४

ब्रह्मा से अग्नि तक चार कुशा धरे ।

(नैऋत्याद्वायव्यान्तम्)

नैऋत्य से वायव्य कोण तक चार कुशा धरे ।

(अग्नितः प्रणीतापर्यन्तम्) ४

अग्नि से प्रणीतापात्र तक चार कुशा धरे ।

(ततोग्नेरुत्तरतः)

अग्नि से उत्तर की तरफ

(पश्चिम दिशि पवित्रच्छेदनार्थं कुशत्रयम्)

पश्चिम में पवित्र छेदन के लिए क्रम से ३ कुशा धरे ।

(पवित्रकरणार्थं साग्रमनन्तर्गर्भ कुशपत्रद्वयम्)

पवित्र करने के लिए कुशा के बीच का कुशा निकाल कर धरे।

(प्रोक्षणी पात्रम्)

एक प्रोक्षणी पात्र धरे ।

(आज्यस्थाली)

घी का कटोरा धरे ।

संमार्जनार्थं कुशत्रयम्

मार्जन के लिए तीन कुशा धरे ।

(उपयमनार्थं वेणीरूपकुशत्रयम्)

तीन कुशा गूंथ कर उत्तर से पश्चिम की तरफ धरे ।

(प्रादेशमात्र समिधस्त्रिः)

अंगूठे से तर्जनी के बराबर तीन लकड़ी धरे ।

स्रुव आज्यम्

स्रुवा का घृत धरे ।

(षटपञ्चाशदुत्तरं यजमानमुष्टि शतद्वया वच्छिन्नतण्डुलपूर्णपात्रम्)

यजमान की दो सौ छप्पन मुट्ठी का पूर्णपात्र या ए ोटे या हंडले में चावल भर कर धरे ।

(पवित्रच्छेदनकुशानांपूर्व पूर्वदिक्क्रमेणासादनीयम्)

पवित्र छेदन कुशाओं से क्रम पूर्वक पूर्व की तरफ धरी हुई सब कुशाओं को ठीक-ठीक धरी हुई देख लेवे ।

(अथ तस्यामेव दिशि असाधारणवस्तुन्यूपकल्पनीयानि)

अनन्तर उसी दिशा में और सब वस्तु स्थापन करनी चाहिये।

(ततः पवित्रच्छेदनकुशैः पवित्रेछित्वा प्रादेशामिति)

पवित्र छेदन कुशाओं से पवित्री की कुशा को अपने प्रादेशमात्र छेदन करे ।

(ततः सपवित्राकरेण प्रणीतोदकं त्रिःप्रोक्षणीपात्रेनिधाय)

पाधा पवित्री की कुशाओं सहित प्रणीता का जल हाथ से तीन बार प्रोक्षणी-पात्र में डाले ।

(अनामिकांगुष्ठाभ्यामुत्तराग्रे पवित्रे गृहीत्वा)

अनामिका अंगुली और अंगूठे के अग्रभाग मे पवित्रे की कुशा को पकड़े हुए-

(त्रिरुत्पवनम्)

प्रोक्षणी पात्र में से तीन बार ऊपर को छींटा दे ।

(ततः प्रोक्षणीपात्रं सव्यहस्ते कृत्वा)

प्रोक्षणी पात्र को सीधे हाथ से बाँये हाथ पर धरे ।

(प्रणीतोदकेन प्रोक्षणी प्रोक्षणम्)

प्रणीता के जल से प्रोक्षणी पात्र में तीन बार उसी कुशा से छींटा दे ।

(ततः प्रोक्षणीजलेन यथासादितवस्तुसेचनम्)

प्रोक्षणी पात्र के जल का सब जगह छींटा लगावे ।

(ततोऽग्निप्रणीतयोर्मध्ये प्रोक्षणीपात्रं निदध्यात्)

अग्नि के और प्रणीता के बीच में प्रोक्षणी पात्र रख दे ।

(आज्यस्थाल्यामाज्य निर्वापः)

घी के कटोरे में घृत करके देखले कि घी में कुछ अशुद्ध वस्तु न हो ।

(ततोऽधिश्रयणम्)

फिर घी का कटोरा अग्नि में रखकर घी को ता ले ।

(ततो ज्वलत्तृणादीनां हविर्वेष्टयित्वा प्रदक्षिणक्रमेण वह्नौ तत्प्रक्षेपः)

कुशा को जला कर घी के कटोरे के चारों तरफ फिरावे फिर उसे अग्नि में डाल दे ।

(पर्यग्निकरणम्)

अग्नि को चेतन कर दे ।

(ततः स्रुवप्रतपनं कृत्वां)

स्रुवे को अग्नि से तपा ले,

(संमार्जकुशानामग्रैरग्रं मध्यैर्मध्य मूलर्मूलं स्रुवं संमार्जयेत्)

संमार्जन कुशाओं को लेकर स्रुवे के आदि (शुरू) में सिरे की कुशा, मध्य में बीच की और अन्त में आखीर की कुशा लगावे ।

(प्रणीतोदकेनाभ्युक्ष्य)

प्रणीता के जल का स्रुवे पर छींटा लगावे- ।

(पुनः स्रुवंप्रतप्य दक्षिणतः कुशोपरिनिदध्यात्)

स्रुवे को फिर तपा कर कुशा के ऊपर दक्षिण में धरे ।

(आज्यस्याग्नेरवतार्य)

घी के कटोरे को अग्नि से उतार लेवे ।

(पुनराज्ये प्रोक्षणीवदुत्पवनम्)

घी को तीन बार प्रोक्षणी की तरह फिर ऊपर को उछाले ।

(अवेक्ष्य सत्युपद्रवे तन्निरसनं कृत्वा पुनः प्रोक्षणी वत्कुर्यात्)

घी को देखले, कोई अपवित्र वस्तु न हो । फिर प्रोक्षणी की तरह तीन बार ऊपर को उछाले ।

(तत उपयमनकुशान् वामहस्तेनादाय)

उपयमन जो कुशा हैं, उन्हें बायें हाथ में उठाले ।

(उत्तिष्ठन् प्रजापतिं मनसाध्यात्वा)

पाधा उठ कर प्रजापति का ध्यान करे ।

(तुष्णीमग्नौ घृताक्ता पलाशसमिधस्तिस्रः क्षिपेत्)

पाधा बिना बोले ढाक की तीन लकड़ी घी में भिंगोकर अग्नि में गेरे ।

(ततः उपविश्य)

कर्मकर्ता बैठ जाय ।

(सपवित्रः प्रणीतोदकेन प्रोक्षणीप्रदक्षिण क्रमेणाऽग्निपर्युक्षणं कृत्वा)

प्रणीता के जल से पवित्रे सहित क्रम से अग्नि के चारों ओर जल गेरे ।

(पवित्रे प्रणीतापात्रे निधाय)

प्रोक्षणी में पवित्रा धर दे ।

(पातितदक्षिण जानु)

सीधा घुटना झुका ले ।

(कुशेन ब्रह्मणान्वारब्धः)

घुटने से लेकर ब्रह्मा तक कुशा फैलावे ।

(समिद्धतमेऽग्नौ स्रुवेणाज्याहुति जुहोति)

स्रुवे से अग्नि में घी गेरे ।

(तत्राधारादारभ्य द्वादशाहुतिषुतत्तदाहुत्यनन्तरं स्रुवावस्थितहुतशेषघृतस्य प्रोक्षणीपात्रे प्रक्षेपः)

आहुति देने से स्रुवे का बचा हुआ घी प्रोक्षणी पात्र में भी डालता जाये ।

(अथ स्वाहा)

अब पाधा हवन करावे ।

ॐ प्रजापतये स्वाहा । इदं प्रजापतये इदन्न मम ।। इति मनसा । ॐ इन्द्राय इदमिन्द्राय इदन्न मम । इत्याधारौ ।। ॐ अग्नये स्वाहा । इदमग्नये इदन्न मम । ॐ सोमाय स्वाहा । इंदसोमाय इदन्न मम । इत्याज्यभागौ । ॐ भूः स्वाहा । इदमग्नये इदन्न मम । ॐ भुवः स्वाहा । इदं वायवे इदन्न मम । ॐ स्वः स्वाहा । इदं सूर्याय इदन्न मम । एता महाव्याहृतयः । ॐ त्वन्नो अग्ने वरुणस्य विद्वान् देवस्य हेडोऽ अवयासिसीष्ठाः । यजिष्ठोवह्नितमः शोशुचानो विश्वादेवा ᳩ सिप्रमुग्ध्यस्मत् स्वाहा ।। इदमग्निवरुणाभ्याम् इदन्न मम । ॐ स त्वन्नो अग्नेवमो भवोती नेदिष्ठो वरुण ᳩ रराणो

वीहिमृडीक थ्रं सुहवा न एधि स्वाहा ।

(इदमग्निवरुणाभ्याम्)

ॐ अयाश्चाग्नेस्य नभिशस्ति पाश्च सत्यमित्वमया असि । अया नो यज्ञवहास्यया नो धेहि भेषज थ्रं स्वाहा । इदमग्नये इदन्न मम । ॐ ये ते शतं वरुणये सहस्रं यज्ञियाः पाशा वितता महान्तः । तेभिर्नो अद्य सवितोत विष्णुर्विश्वे मुञ्चन्तु मरुतः स्वर्काः स्वाहा । इदं वरुणाय पवित्रे विष्णवे विश्वेभ्यो देवेभ्यो मरुदेभ्यः स्वर्केभ्यः इदन्न मम ।। ॐ उदुत्तम वरुण पाशमस्मदवाधमं विमध्यम थ्रं श्रथाय । अथावयमादित्य व्रते तवानागसो अदितये स्याम स्वाहा ।। इदं वरुणाय इदन्न मम ।

(एता सर्वप्रायश्चित्त संज्ञकाततोऽन्वारब्ध विना)

ब्रह्मा के घुटने से कुशा को हटाले ।

ॐ प्रजापतये स्वाहा । इदं प्रजापतये इदन्न मम। इति मनसा प्राजापत्यम् ।। ॐ अग्नये स्विष्टकृते स्वाहा । इदमग्नये स्विष्टकृते । ॐ गणपतये स्वाहा । इदं गणपतये । ॐ ब्रह्म

जज्ञानं प्रथमम्पुरस्ताद्विसीमतः० स्वाहा । इदं ब्रह्मणे इदन्न मम । ॐ विष्णो रराट्० स्वाहा। इदं विष्णवे इदन्न मम । ॐ नमः शम्भवाय च० स्वाहा ।। इदं शम्भवाय इदन्न म ।।

(अथ नवग्रह होमः)

नीचे लिखे मन्त्रों से नवग्रहों की आहुति दे-

(समिद्धीमं कुर्यात्)

आखे की लकड़ी की आहुति दे, इस मन्त्र से-

ॐ आकृष्णेन० स्वाहा । इदं सूर्याय इदन्न मम।

ढाक की लकड़ी की आहुति दे ।

ॐ इमंदेवा अ० । इदं चन्द्राय इदन्न मम ।

कत्थे की लकड़ी की आहुति दे ।

ॐ अग्निर्मूर्धा० इदं भौमाय इदन्न मम ।

चिरचिटे की लकड़ी की आहुति दे ।

ॐ उद्बुध्यस्वाग्ने० इदं बुधाय इदन्न मम ।

पीपल की लकड़ी की आहुति दे, इस मन्त्र से-

ॐ बृहस्पतये० । इदं बृहस्पतये इदन्न मम ।

गूलर की लकड़ी की आहुति दे, इस मन्त्र से-

ॐ अन्नात्परि० इदं शुक्राय इदन्न मम ।

जांड़ की लकड़ी की आहुति दे, इस मन्त्र से-

ॐ शन्नोदेवी० । इदं शनिश्चराय इदन्न मम ।

दूब की नाल की आहुति दे, इस मन्त्र से-

ॐ कयानश्चित्र० । इदं राहवे इदन्न मम ।

कुशा की आहुति दे, इस मन्त्र से-

ॐ केतुंकृण्वन्न० इदं केतवे इदन्न मम० । ॐ अधिदेवेभ्य स्वाहा । प्रत्यधिदेवेभ्यः स्वाहा । पंचलोकपालेभ्यः स्वाहा । दशदिक्पालेभ्यः स्वाहा । वरुणदेवाय स्वाहा । वास्तुकाय स्वाहा। गौर्य्यादिषोडश मातृभ्यः स्वाहा । प्रधानदेवाय स्वाहा । सर्वेभ्यो देवेभ्यः स्वाहा ।।

(अथ चरु आह्वानम्)

ॐ एतन्ते देव०

इस मन्त्र से चरु की प्रतिष्ठा कर पूजन करे, सामग्री चढ़ावे, हाथ जोड़े ।

ॐ स्वस्ति न इन्द्रो०

(ब्राह्मणवरणसंकल्पः)

एक पान पर रोली व कलावा, चावल, फूल, हार, सुपारी,

अंगोछा, दक्षिणा धर कर जो ब्राह्मण आहुति दे, उसके वरण का संकल्प करे ।

अद्याऽमुकगोत्रोहं अमुक शर्माहं अस्मिन् श्रीदुर्गाहवन कर्मणि सांगताफलसिद्ध्यर्थं श्रीमहाकाली महालक्ष्मी महासरस्वती प्रीत्यर्थं मेभिर्गंधाक्षत पुष्पचन्दनताम्बूलं पुंगीफलंदक्षिणा वासोभि अमुक गोत्रममुकशर्माणं होतृत्वेन त्वामहंवृणे ।।

पान पर से कलावा लेकर पौंहची बाँधे । मन्त्र-

ॐ व्रतेन दीक्षामाप्नोति०

तिलक करे ।

ॐ नमो ब्रह्मण्यदेवाय० ।। (पुनः चरुहोमः)

पाठ करने वाला जल-चावल लेकर संकल्प करे- ।

ॐ ततस्द्र् विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः ॐ नमः परमात्मने श्रीपुराणपुरुषोत्तमायाद्य श्रीब्रह्मणोह्नि द्वितीय प्रहरार्द्धे श्रीश्वेतवाराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे कलियुगे कलि प्रथमचरणे जम्बूद्वीपे भरतखण्डे आर्य्यावर्तान्तर्गते ब्रह्मावर्तैकदेशे पुण्यक्षेत्रे वेदोक्तफल

प्राप्तिकामनासिद्ध्यर्थं वर्तमान सम्वत्सरे अमुकायने भास्करे अमुकगोलावलम्बने ऽमुकपक्षे ऽमुकतिथौ ऽमुकवासरे ऽमुकगोत्रोहममुकशर्म्माहं सकलपापक्षयपूर्वक सकल मंगलप्राप्त्यै सर्वारिष्टनिवारणार्थं सर्वत्र हर्षविजयद्विपदे चतुष्पदे पशुबांधव कामः श्रीमहाकाली महालक्ष्मी महासरस्वती देवताप्रीतये आदौ गणेशं मालया कवचार्गल कीलकैः रात्रिसूक्तं च नवार्ण आद्यन्तयोः पद्मसूक्तं च मार्कण्डेय उवाच इत्यारम्भ सावर्णिर्सविता मनुरित्येत सप्तशतीपाठमहं करिष्ये ।।

पहिले एक माला गणेशजी के मन्त्र की जप कर चरु की आहुति दे ।

(ॐ गणपतये स्वाहा)

दुर्गा के तीनों कवच का पाठ करे । फिर इस मन्त्र से एक माला की आहुति दे । मन्त्र-

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे स्वाहा ।
ॐ मां माले महामाये सर्वशक्ति स्वरूपिणी ।
चतुर्वर्गस्त्वयि स्तस्थस्तस्मान्मे सिद्धिदा भव ।
ॐ अविघ्नं कुरु माले त्वं गृह्णामि दक्षिणे करे ।

जप काले च सिद्ध्यर्थं प्रसीद मम सिद्धये ।
ॐ अक्षमालाधिपतये सुसिद्धिं देहि देहि सर्व मन्त्रार्थ साध्य २ सर्वसिद्धिं परिकल्पय २ मे स्वाहा ।।

फिर देवी- सूक्त का पाठ करे (और आहुति न दे), फिर दुर्गा का पाठ करे आहुति दे । जब पहला अध्याय पूर्ण हो जावे तब पाधा ये मन्त्र पढ़े-

मार्कण्डेय पुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवीमाहात्म्य सत्याः सन्तु मम यजमानस्य कामाः जगदम्बार्पणमस्तु ।।

ऐसा बोलकर ज़ल छोड़ दे । स्रुवे पर १ पान, १ सुपारी, चरु सब सामग्री धर कर आहुति वाला खड़ा हो जाय । यजमान उसके सीधे कंधे पर अपना सीधा खड़ा हाथ रखले पाधा ये मन्त्र पढ़े-

ॐ अम्बे अम्बिके अम्बालिके नमोनयति कश्चन। ससस्त्यः श्वकः सुभद्रिकां काम्पीलवासिनीं स्वाहा ।।

अग्नि में छोड़दे फिर पांच आहुति घी की दे ।

ॐ प्राणाय स्वाहा । ॐ अपानाय स्वाहा ।
ॐ व्यानाय स्वाहा । ॐ उदानाय स्वाहा ।
ॐ समानाय स्वाहा ।।

(अग्नि में)

कुशा से जल की छींटा लगावे ।

ॐ आपः शिवाः शिवतमाः शान्ताः शान्ततमास्ते कृण्वन्तु भेषजम् ।

इसी प्रकार सब अध्यायों के अन्त में जब पाठ समाप्त हो, तब तब एक माला निर्वाण-मन्त्र की आहुति देवे । मन्त्र-

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे स्वाहा ।

फिर हवन के दशांश का एक माला तर्पण करे और तर्पण के दशांश का मार्जन करे । एक बर्तन में जल भर कर उसमें दूध और गंगाजल मिलाकर फूल या दूर्वा लेकर आहुति देने वाला अपने हाथों का अंजुलि भर कर अंगुलियों से ऊपर को जल छोड़े । इसे तर्पण कहते हैं । अग्नि में छींटा लगाने को मार्जन कहते हैं । तीसरे अध्याय के अन्त में शहद की आहुति देवे । मन्त्र-

गर्ज गर्ज क्षणं मूढ मधु यावत्पिवाम्यम् ।
मया त्वय हतेऽत्रैव गर्जिष्यन्त्याश देवता स्वाहा ।।

आठवें अध्याय के अन्त में लाल चन्दन की आहुति देवे । मन्त्र-

नीरक्तश्च महीपाल रक्तबीजो महासुरः ।
ततस्ते हर्ष मतुलमवापुस्त्रिदशा नृप स्वाहा ।।

ग्यारहवें अध्याय में खीर, हलवा या पेड़ा की आहुति देवे । मन्त्र-

सर्वस्य बुद्धिरूपेण जनस्य हृदि संस्थिते ।
स्वर्गापवर्गदे देवि नारायणि नमोस्तुते स्वाहा ।।

इस मन्त्र से गिलोय की आहुति देवे ।

रोगानशेषानपहंसि तुष्टा रुष्टा तु मामान्सकलानभीष्टान् । त्वामाश्रितानां न विपन्नराणां त्वमाश्रिता ह्याश्रयतां प्रयान्ति स्वाहा ।।

इस मन्त्र से कालीमिर्च या सफेद सरसों की आहुति देवे-

सर्वबाधाप्रशमनं त्रैलोक्यस्याखिलेश्वरि ।
एकमेव त्वया कार्यमस्मद्वैरिविनाशनम् स्वाहा ।।

इस मन्त्र से पालक अथवा बथुवे की आहुति देवे ।

शाकम्भरीति विख्यातिं तदा यास्याम्यहं भुवि ।
तत्रैव च वधिष्यामि दुर्गमाख्यं महासुरम् स्वाहा ।।

इस मन्त्र से अनार की आहुति देवे-

रक्तदन्ता भविष्यन्ति दाड़िमा कुसुमोपमम् ।।

ग्यारहवें अध्याय के अन्त में सफेद चन्दन व कपूर की आहुति देवे । मन्त्र-

भ्रामरीति च मां लोकास्ता स्तोष्यन्ति च सर्वतः ।।

विर्सजन मन्त्र-

ॐ त्वं माले सर्व देवानां प्रतिदा शुभदा भव ।
शिवं कुरुष्व मे भद्रे यशो वीर्यं च सर्वदा ।

इति माला शिरसि निधाय प्राणानायस्य न्यासं कृत्वा विसर्जयेत् ॥

(दशदिक्पालेभ्यो बलिं दद्यात्)

वेदी के चारों तरफ दस दिशाओं में दस दीवे धर कर उनमें दस घी की बत्ती बाले । दही, उड़द, सिन्दूर ये भी उनके पास रक्खे ।

(प्रतिष्ठां कृत्वा)

चावल लेकर प्रतिष्ठा करे ।

ॐ एतन्ते देव० ॥

चावल छोड़े पूजन करे ।

सब सामग्री चढ़ावे, फिर हाथ जोड़े । मन्त्र-

ॐ इन्द्रो वह्नि पितृपतिर्नैऋृतो वरुणो मरुत् ।
कुबेर ईशः पतयः ब्रह्मानन्त स्तथैव च ।१।

फिर संकल्प करे ।

अमुक गोत्रोहं ऽमुकशर्म्माहं भो दशदिक्पालाः दिशं रक्ष बलिं भक्ष मम यजमानस्य सकुटुम्बस्य आयुः कर्ता क्षेमकर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता

तुष्टिकर्ता निर्विघ्नकर्ता वरदो भव ॥

(क्षेत्रपालेभ्यो बलिं दद्यात्)

आटे का एक दीवा चौमुखा बनाकर चार बत्ती गेर, कड़वे तेल से बाले । दही, उड़द की दाल, सिन्दूर, स्याही, पैसा-ये उसके पास डाल दे । चावल लेकर प्रतिष्ठा करे ।

एतन्ते देव० ॥

(पूजनं कृत्वा)

पूजन करे, फिर हाथ जोड़े ।

ॐ करकलितकपालः कुण्डलीदण्डपाणिस्तरुण तिमिरनील व्याल यज्ञोपवीती । क्रतुसमय सर्पया विघ्नविच्छेद हेतुर्जयति वटुकनाथः सिद्धिदः साधकानाम् ॥ ॐ क्षेत्रपाल शाकिनी डाकिनी भूत प्रेत बैताल पिशाच सहिताय इमं बलिं समर्पयामि ।

(संकल्प)

जल, चावल, पैसा ले ।

अमुकगोत्रोहं ऽमुकशर्म्माहं भो क्षेत्रपाल दिशं रक्ष बलिं भक्ष मम यजमानस्य सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुष्कर्ता क्षेमकर्ता शान्तिकर्ता

पुष्टिकर्ता वरदो भव ।।

दीवे को वहाँ से हटा दे । फिर उस जगह जल का छींटा लगावे । मन्त्र-

ॐ अपवित्रः पवित्रोवा० पूर्णाहुतिं दद्यात् ।

स्रुवे पर घी का भरा नारियल और चरु धरे । फिर चावल लेकर प्रतिष्ठा करे ।

ॐ एतन्ते देव० ।।

चावल छोड़ कर पूजन करे, सब सामग्री चढ़ावे, फिर हाथ जोड़े । मन्त्र-

ॐ स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवा० ।।

फिर उसको लेकर खड़ा हो जाय, पाधा यजमान के सीधे कन्धे पर अपना बायां हाथ रखे और यजमान अपने सीधे हाथ में कुछ दक्षिणा ले । मन्त्र-

ॐ मूर्धानं दिवो अरतिं पृथिव्या वैश्वानर मृत आजातमग्निम् ।।कवि छं सम्राजमतिथिं जनना मासन्ना पात्रं जनयंत देवाः स्वाहा ।।

यजमान नारियल को अग्नि में धरदे, फिर उसके ऊपर घी की धार छोड़े, इस मन्त्र से । मन्त्र-

ॐ वसोः पवित्रमसि शतधारं वसोः पवित्रमसि सहस्रधारम् । देवस्त्वा सविता पुनातु वसोः

पवित्रेण शतधारेण सुप्त्वा कामधुक्षः ।।

(त्र्यायुषकरणम्)

स्रुवे से हवन की भस्मी उठाकर अनामिका से पहिले अपने लगावे, फिर यजमान के लगावे । मन्त्र-

त्र्यायुषं जमदग्नेरिति ललाटे ।

माथे के ऊपर ।

कश्यपस्य त्र्यायुषमिति ग्रीवायाम् ।

गले में

यद्देवेषु त्र्यायुषमिति दक्षिणबाहुमूले ।

सीधे कन्धे पर ।

तन्नो अस्तु त्र्यायुषमिति हृदये ।

छाती से लगावे ।

(संस्रवप्राशनम्)

यजमान स्रुवे से जरा सा घी अनामिका अँगुली से लगाकर खा ले ।

(आचमनम्)

फिर आचमन करे । मन्त्र-

ॐ गंगाविष्णु० ३, त्रिवारं पठेत् ।

(हस्तौ प्रक्षाल्य)

हाथ धो डाले । मन्त्र-

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वा० ।।

यह मन्त्र पढ़कर यजमान के ऊपर प्रणीता के जल का छींटा दे ।

ॐ दुर्मित्रिया स्तस्मै सन्तु यस्मान्द्वेष्टि यं च वयं द्विष्तः- ।

(इति मंत्रेणैशान्यां प्रणीतांन्युब्जी कुर्यात्)

इस मन्त्र से प्रणीतापात्र को ईशान दिशा में उल्टा कर दे ।

(ब्रह्मणे पूर्णपात्रदानम्)

यजमान पूर्णपात्र पर एक मुद्रिका रख कर संकल्प करे ।

अमुक गोत्रोहं अमुकशर्माहं अस्मिन् श्रीदुर्गाहवन कर्मणि सांगताफलसिद्ध्यर्थं श्रीमहाकाली महालक्ष्मी महासरस्वती देवता प्रीत्यर्थमिदम्पूर्णपात्रं प्रजापति दैवतं यथा नामगोत्रायऽमुक शर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे ।।

जो ब्राह्मण ब्रह्मा बना है, उसको दे दे और उसकी दान प्रतिष्ठा का संकल्प करे ।

अद्यामुकगोत्रोऽहं अमुक नाम शर्म्माहं दुर्गाहोम कर्मणि कृता कृतावेक्षण ब्रह्माकर्मप्रतिष्ठा सिद्धध्यर्थमिदं पूर्णपात्रं अमुक गोत्रायऽमुकशर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे ।

यह दक्षिणा भी उसी को दे दे ।

(ब्रह्मग्रन्थि विमोकः)

ब्रह्मा की गांठ खोल दे ।

(अथ वर्हिहोमः)

वेदी के चारों तरफ की सब कुशा उठा कर अग्नि में डाल दे। मन्त्र-

ॐ देवा गातु विदो गातुं वित्वा गातुमित मनसस्पतऽइमम्देव यज्ञ ॐ स्वाहा वातेधाः स्वाहा ।।

आरती दुर्गा जी की

जय अम्बे गौरी, मैय्या जय श्यामा गौरी ।
तुमको निशि दिन ध्यावें ब्रह्मा विष्णु हरी ।। जय०
मांग सिंदूर विराजे, टीकौ मृग मद को ।
उज्ज्वल से दोऊ नैंना चन्द्रवदन नीको ।। जय०

कनक समान कलेवर, रक्तांबर राजै ।
रक्त पुष्प गल माला, कंठन पर साजै ।। जय०
कानन कुण्डल शोभित, नासग्रे मोती ।
कोटिक चन्द्र दिवाकर सम राजत ज्योती ।। जय०
केहरि वाहन राजत, खड्ग खप्पर धारी ।
सुर नर मुनिजन सेवत, तिनके दुःखहारी ।। जय०
शुम्भ निशुम्भ बिडारे महिषासुर घाती ।
धूम्र विलोचन नैना निश दिन मद माती ।। जय०
चण्ड-मुण्ड संहारे शोणित बीज हरे ।
मधु कैटभ दोऊ मारे, सुर भय-हीन करे ।। जय०
चौंसठ योगिनि मंगल गावैं, नृत्य करत भैरूं ।
बाजत ताल मृदंगा और बाजत डमरूं ।। जय०
ब्रह्माण रुद्राणी, तुम कमला रानी ।
आगम निगम बखानी, तुम शिव पटरानी ।। जय०
भुजा चार अति शोभित, खड्ग खप्पर धारी ।
मन वांछित फल पावत, सेवत नर नारी ।। जय०
ब्रह्मादिक इन्द्रादिक, रुद्रादिक ध्यावें ।
सुर नर मुनिजन सेवत, वांछित फल पावें ।। जय०
दो भुज चार चतुर्भुज, अष्टभुज ते सोहें ।
तीनों रूप निरखता, त्रिभुवन जन मोहें ।। जय०

कंचन थाल विराजत, अगर कपूर बाती ।
मालकेतु में राजत, कोटि रतन ज्योती ।। जय०
रामस्वरूप तुम्हारो चेरो, निशिदिन गुण गाता ।
सुन्दर श्यामा गौरी, त्रिलोकी माता ।। जय०
अम्बेजी की आरती जो कोई गावे ।
कहत शिवानन्द स्वामी, सुख सम्पति पावे ।। जय०

पश्चात् बूरे मे पांचों मेवा मिलाकर भगवती को भोग लगावे और ५ आहुति अग्नि में छोड़े । मन्त्र-

प्राणाय स्वाहा ।। अपानाय स्वाहा ।। उदानाय स्वाहा ।। व्यानाय स्वाहा ।। समानाय स्वाहा ।।

जल की तीन आचमनी अग्नि में छोड़े । फिर अग्नि की परिक्रमा करे ।

यानि कानि च पापानि जन्मान्तरकृतानि च ।
तानि तानि प्रणश्यन्ति प्रदक्षिण पदे पदे ।
(प्रार्थना) अपराध सहस्राणि क्रियन्तेऽह र्निशिमया । दासोऽयमिति मां मत्वा क्षमस्व परमेश्वर आवाहनं न जानामि न जानामि विसर्जनम् । पूजां चैव न जानामि क्षम्यतां परमेश्वरः ।।अन्यथा शरणान्नास्ति त्वमेव शरणम् मम । तस्मात्कारुण्य भावेन रक्षत्वं परमेश्वर ।।

एकं चण्डी रवौ सप्त तिस्रो दद्यात् गणेश्वरः ।
चत्वारि केशवं दद्याच्छिवस्यार्द्धं प्रदक्षिणा ।१।

अर्थ-देवी की १ परिक्रमा करे, सूर्य की ७, गणेश की ३, विष्णु की ४, शिव की आधी परिक्रमा करना चाहिए । फिर प्रसाद बंटवा दे ।

कुम्भास्तथैव जलेन यजमानं सिंचति

फिर कलशें के जल का यजमान के ऊपर आम के पत्ते से छींटा दे । मन्त्र-

आपो हिष्ठा मयोभुव स्तानऊर्ज्जे दधातन महेरणाय चक्षसे ।१। यो वः शिवतमो रस स्तस्य भाजयते हनः । उशतीरिव मातरः ।२। तस्मा अरंगमामवो यस्यक्षयाय जिन्वथ । आपोजन यथाचनः ।३।

यजमान के तिलक करे ।

आदित्या वसवोरुद्रा विश्वेदेवा मरुद्गणाः ।
तिलकं ते प्रयच्छन्तु धर्म कामार्थसिद्धये ।।

(कर्मकर्ता सुवर्ण दक्षिणा संकल्पः)

अमुकगोत्रोहं अमुक शर्म्माहं श्रीदुर्गाहवनकर्मणि सांगताफल सिद्ध्यर्थं श्रीमहाकाली महालक्ष्मी महासरस्वती देवता प्रीत्यर्थमेतत्कर्म करियित्रे

अमुक गोत्राय अमुक शर्मणे आचार्याय इमां स्वर्णादि दक्षिणां तुभ्यमहं सम्प्रददे ।

हवन कराने वाले को दे दे । इसकी दान प्रतिष्ठा का संकल्प करे ।

अमुक गोत्रोहंऽमुकशर्म्माहं अस्मिन् श्रीदुर्गाहवन सांगताफल सिद्ध्यर्थं श्रीमहाकाली महालक्ष्मी महासरस्वती देवता प्रीत्यर्थं कर्म कर्त्रे दानप्रतिष्ठादक्षिणा आचार्याय तुभ्यमहं सम्प्रददे ।।

हवन कराने वाले को दे दे ।

(आहुति चन्द्रमयी दक्षिणा संकल्पः)

आहुति देने वालों की दक्षिणा का संकल्प करे ।

अमुकगोत्रोहऽमुकशर्म्माहं अस्मिन् श्रीदुर्गाहवनकर्मणि सांगताफलसिद्ध्यर्थं श्रीमहाकाली महालक्ष्मी महासरस्वती देवता प्रीत्यर्थमिमां आहुति रजतदक्षिणां अमुक गोत्रेभ्यो मुकनाम शर्मणे तुभ्यमहं सम्प्रददे ।।

यह दक्षिणा आहुति देने वाले को दे दे । दान प्रतिष्ठा का संकल्प करे ।

अमुकगोत्रोहंऽमुक शर्म्माहं अस्मिन् श्रीदुर्गा हवनसांगताफलसिद्ध्यर्थं श्रीमहाकाली

महालक्ष्मी महासरस्वती देवता प्रीत्यर्थं आहुति दान प्रतिष्ठा ताम्रमयि दक्षिणा अमुक गोत्रेभ्यो अमुक नामब्राह्मणेभ्यो तुभ्यमहं सम्प्रददे ।।

पाधा यह दक्षिणा आहुति देने वाले को दिलवादे । फिर यजमान को नारियल, मीठा, फूल लेकर आशीर्वाद दे । मन्त्र-

ॐ मन्त्रार्थाः सफलाः सन्तु पूर्णाः सन्तु मनोरथा। शत्रूणां बुद्धिनाशोस्तु मित्राणामुदयोस्तु वः ।।

नारियल, मीठा और फूल यजमान की गोद में देकर यजमान के तिलक करे । मन्त्र-

ॐ स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः । स्वस्तिः नस्ताक्ष्यों अरिष्टनेमिः स्वस्तिः नो बृहस्पतिर्दधातु ।।

फिर यजमान गणेश व लक्ष्मीजी को बचा कर सब देवताओं पर चावल छोड़े । मन्त्र-

ब्रह्माण्डे च गता ब्रह्मा कैलाशे च महेश्वरः । बैकुण्ठे च गतो विष्णुर्देवाः स्वर्गे च संस्थिताः।१। सूर्यः कलिंगदेशे च यामुनं चंद्रमागतः । मंगलाश्चाप्ययोध्यायां कैलाशे च

बुधेगतः ।२। सिन्धुदेशे गतो जीवः शुक्रो भोजकटे तथा । शनि सौराष्ट्रदेशे च राहुर्देशे मलेच्छगे ।३। केतुश्च पर्वते देशे पाताले पन्नगा गताः । सर्वे गच्छन्तु स्वस्थाने यजमानस्य हिताय च ।४। लक्ष्मीर्गणपतिश्चैव यजमानगृहे स्थितौ । गच्छ गच्छ सुरश्रेष्ठ स्वस्थानं परमेश्वर । यत्र ब्रह्मादयो देवास्तत्र गच्छ हुताशन !

यजमान ऐसा कहे कि गणेशजी और लक्ष्मीजी हमारे यहाँ रहो और सब देवता अपने-अपने स्थान को पधारें, फिर हाथ जोड़े ।

रूपं देहि जयं देहि, यशो देहि द्विषोजहि ।
पुत्रान्देहिं धनं देहि सर्वाकामांश्चदेहि मे ।
प्रमादात् कुर्वतां कर्म प्राच्यवेताध्वरेषु यत् ।
स्मरणादेव तद्विष्णोः सम्पूर्णस्यादिति श्रुतः ।

।। इति हवन- पद्धति समाप्तम् ।।



अथ-हवन सामग्री

घड़ा १, खरवा १, सराई १, हंडला या लोटा १, दीवले १०, सरबे ४, केले के पत्ते ४, बन्दरगाह ४, बार, फूल, दूब के नाल, कुशा, पान २०, आम की टहनी, पच पल्लव-(पीपल का पत्ता, आम का पत्ता, गूलर का पत्ता, बड़ का पत्ता, जामुन का पत्ता) । लकड़ी ढाक की, गूलर की, जांड की, कुशा, नारियल २, पचरंग, हल्दी की गांठ १, सुपारी ४२, पांचों मेवा १ पाव, धूप, भुड़बल, सिन्दूर, सिताबर, लाल चन्दन, सफेद चन्दन, शहद, चन्दोया लाल १ मीटर, अंगोछे २, धोती, दही १०० ग्राम, दूध १०० ग्राम, गंगाजल, दाल उड़द की १०० ग्राम, पीली मिट्टी १ तसला, बताशे, चावल १ किलो (पूर्ण पात्र को), जौ १ किलो कलशे के नीचे को, लकड़ी ढाक की ५ किलो, मिट्टी सात जगह-(घुड़साल की, हाथी खाने की, बांबी की, नदी की, कुण्ड की, राजद्वार की, गोशाला की), पंचरत्न- स्वर्ण, हीरा, मोती, पुखराज, नीलम, पंचगव्य- गो-मूत्र, गो-गोबर, गोघृत, गो-दधि, गो-दुग्ध, आसन कुशा के ६, हुरसा १, केशर, बूरा २०० ग्राम, भोग को, मेवा पांच बूरे में मिलाने को, रुई कच्ची, घी का दीपक, बक्स दियासलाई, कलावे की गुच्छी १, चन्दन की गांठ तथा दक्षिणा के लिए सिक्के।

एकद्वित्रिचतुर्भागैः ब्रीही आज्य यवस्तिलैः ।
चरुहोमे प्रकर्त्तव्यं यथा श्रद्धा च शर्करा ।१।

चावल आधा किलो, घी १ किलो, जौ १ किलो, तिल २ किलो, भोजपत्र ५० ग्राम, इन्द्र जौ ५० ग्राम, बूरा २५० ग्राम, पांचों मेवा श्रद्धानुसार ।

